ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑓓𑓑𑓙 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓐𑓑 𑒁𑒏𑓂𑒙𑒴𑒥𑒩 𑓒𑓐𑓒𑓓 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓖 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓙𑓐 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓑𑓙)

[𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢: 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒃-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve

Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 379 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओहिपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ई त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।। हम सभ लोकनिकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनावी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (आन सभकेँ)। मुदा ई वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु लोक लेल निषेध कऽ देलक, मुदा स्मृति सेहो

वेदनाशकं प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) सँ एकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः

: :

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-डी एल एड बनाम बी एड

२.३.लालदेव कामत-गढ़चिनौलीक स्मरण/ स्वनाम धन्य शिरामणी/ साहित्य रत्न अनूप लाल मंडल/ पुस्तक चर्चा- दुख बचनी/ ठहरा जनक मौलायल गाछ

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२८)

२.५.नन्द विलास राय-झुझुरैत

२.६.कुमार मनोज कश्यप- लघुकथा- सादृश्यता

२.७.नवीन्द्र नारायण मिश्र-ठहरा जनक मौलाएल गाछ (उपन्यास)-धारावाहिक

२.८.किशन कारीगर-पुरस्कारी गुर्गा पुरस्कार बँटा उठौत (हास्य कटाक्ष)

२.९.संाष क्ुमान नाय 'वटाही'- ७कटा संम्मनध- काकी : गुधनी दनी

३.यष्ठ खण्ड

३.१.यनन मिश्र 'गोनौली'-संस्कानक चूकल

३.२.नाज किशोन मिश्र-अनूरुन

३.३.कामश्नन चौधनी- आह्वान/ प्रार्थना

३.४.नामानन्द मण्डल- हा वावा गांधी!/ लाल वहादुन शास्त्री!/ हा काका जयी

३.५.प्रमाद भा 'गोकुल'- श्रीमैथिली चनध म



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्ति र्वश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তির্বিশ্বে দেৱা: শান্তির্ব্রঁহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রঁহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৰতাগণমে আ ব্রঁহ্মমে শাংতি হুঅয।

ওঁ-ব্রঁহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক ৰীচ, আপ:-জল, ৰিশ্বেদেৰা- সভ দেৰতা, ব্রঁহ্ম- সর্জক।

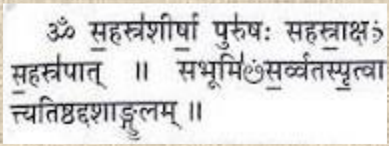
ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুৰু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্রা↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ রি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্য↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।


ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिँसर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জায়ত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्राँत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑৲।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

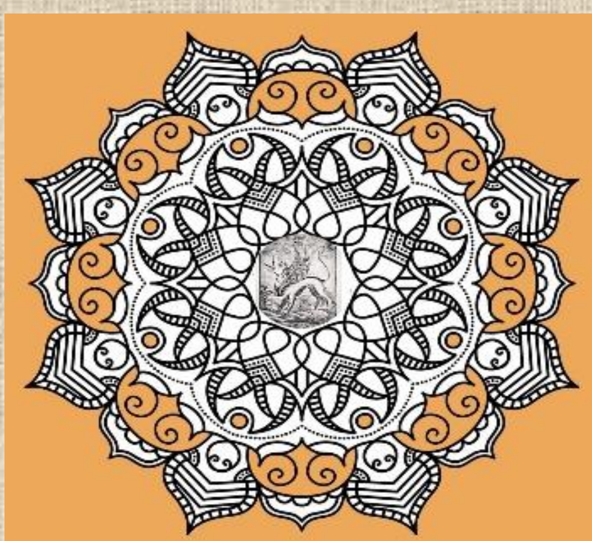
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

𑓅 (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७८ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

बाल साहित्यमे मोटा मोटी एक वर्खसँ कम उमरक बच्चासँ लऽ कऽ अठारह वर्खक किशोर धरिक उपयोगक साहित्य सम्मिलित अछि। मानसिक रूपसँ आस्ते-आस्ते सीखएबला बच्चा लेल ई वर्गीकरणक कए दोसर तरहेँ हएत, जेना जे सामान्य छह वर्खक बच्चा लेल बाल साहित्य मानल जाइए से हुनका लोकनि लेल दस वर्खक आयुमे प्रयुक्त भऽ सकैए।

सरस्वती नदी, जल-प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, शिल्पमय कथा काव्य, प्राग्वैदिक देश शिल्पमयक खोज, सृष्टिकथा आ देवतंत्रक विकास ई सभ ऋग्वेद आ अवेस्ता आदिक सन्दर्भमे प्रारम्भिक बाल साहित्य मानल जा सकैए। अना-यूक्त रथक वर्णन वेदमे भेटैत अछि। नहिये तँ ई पश्चिम एशियामे छल आ नहिये युनानमे। भारतीय दर्शन, शिल्प, कथा, अश्वविद्या, संगीत, भाषिक तन्त्र आ चिंतनक संग ई उद्धारित होमए लागल पश्चिम एशिया, मिश्र आ युनानमे। दोसर सहस्राब्दी ई.पूर्व अनायुक्त रथ, भारतीय दर्शन, भारतक ध्यान, ऋग्वैदिक तन्त्रचिंतन, अश्वविद्या, शिल्प-तकनीकी आ पुरातन कथा भारतसँ पश्चिम एशिया, क्रीट-युनान दिशि जाए लागल। कालक्रमसँ मिश्र, सुमेर-बेबीलोन आदि सभ्यता आ सिन्धु आ हित्ती सभ्यतासँ बहुत पहिनहियेसँ ऋग्वेदक अधिकांश मंडलक रचना भऽ गेल छल। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेदसँ पहिने सेहो भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। तकर मौखिक साहित्य जेना गाथा,

नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओइ भाषाम रचल गेल हएत। एहन गाथा सभक गायकक लेल "गाथिन", "गातुविद्" आ "गाथपति" शब्दक प्रयुक्त भेल। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उपाख्य कथित होइत अछि। वैदिक आख्यान, जातक कथा, ईसप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहित अछि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चुहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतऽ सलहेस राजा बनैत छथि ओतऽ चोर बनि जाइत छथि, आ जतऽ सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशाली रूपेँ जानल जाइत छथि।

कथा-गाथा सँ बढ़ि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्नैसम शताब्दीक अन्तम भेल। एकरा लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरू भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढ़ल। जँ हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कए रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि, जेना ई चिड़ै आ मालजालक माध्यमसँ कथा कहल गेल अछि से पंचतंत्र आ हितोपदेशसँ बढ़ैत पहिने बालसाहित्यक अवधारणा प्रस्फुट करैत अछि। जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रक कथा कहैत-कहैत स्त्री आ शुद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ

जाइ छथि सएह हाल रामचरित मानसक अछि। ईसप ग्रीसक दास छलथि आ अपन मालिकक बच्चाकेँ कथा सुनबैत छलथि जे ईसप्स फेबल्स रूपमे जगप्रख्यात भेल, अंगूर नै भेटलापर लोमड़ी कहैत जे ई अंगूर बड्ड अम्मत छौ, ई सभ खिस्सा अमर भऽ चूकल अछि। मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक “मसनवी” फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ नायकक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि। कथा यदि सभ प्रबुद्ध नै होइत तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकैत। आ जे एकटा व्यक्ति कथा यदि ओहि दिशामे सोचत तँ कथाक सार्थकता सिद्ध होएत। आ जकरा लेल रचित अछि ई कथा जँ ओ नै पढ़ैत तँ ओकर ओहि परिस्थितिमे हस्तक्षेप करबामे सक्षम व्यक्ति तँ पढ़ैत। आ जे समाज बदलत तँ सामाजिक मूल्य सनातन रहत? प्रगतिशील कथामे अनुभवक पुनर्निर्माण करब, परिवर्तनशील समाजक लेल, जाहिसँ प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजन हुअए। आकि ई परिवर्तनशील समयकेँ स्थायित्व देबा लेल परम्पराक स्थायी आ मूल तत्त्वपर आधारित कथाक आवश्यकता अछि? व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध अछि आ दुनू परस्पर विरोधी अछि। तेँ संयोजन आवश्यक, विश्व दृष्टि आवश्यक। कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नै अछि जे भावनाइसँ कागतपर जेना-तेना उतारि देलिऐ। ई सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्देशित होइत अछि। तँ कथा अनुभवकेँ पुनर्रचित कऽ गढ़ल जाएत आ व्यक्तिगत रचना तखन सामाजिक आ सामूहिक रचना बनि जाएत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबए पड़तन्हि तँ शोषितकेँ एकर विरोध मुखर रूपमे करए पड़तन्हि।

कथा क्रमबद्ध ढंगसँ आ सुव्यवस्थित ढंगसँ लिखल गेल ई उद्देश्य प्राप्त करत, बुद्धियुक्त आ अनुशासनयुक्त बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उपाख्यान संवादकेँ जन्म देने छल जे पौराणिक साहित्यक कठिनाहिता खतम कऽ देलक।

ई सूर्य अन्य-अन्य आन सूर्यसँ एकटा मध्यम कोटिक तारागण-मण्डलक स्थान- अछि। ओहि मण्डलक स्थानक एकटा ग्रह पृथ्वी आ ओकर एकटा नगर-गाममे रहनिहार हम सभ अपन माथपर हाथ राखि चिन्तित छी जे हमर समस्यासँ पैघ ककर समस्या? हमर कथाक समक्ष ई वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही- तर्क-पूर्ण विश्वास आ अनुभवपूर्ण विश्वास। आत्मप्रशंसा आ परस्पर प्रशंसाक परम्परा जकरामे वासनाक निष्ठा सेहो सम्मिलित अछि, उत्कृष्ट बाल साहित्यक निर्माणमे बाधक अछि। सरकारपर आलम्बन, प्राथमिकताक अज्ञान- जकर कारणसँ महान बनबा/ बनेबा लेल लेखक-समीक्षक जान अर्पण छथि, आ ओहि स्थितिमे जखन राजा मरि रहल अछि। कार्ययोजनाक स्पष्ट अभाव अछि आ जेना-तेना किछु मैथिली लेल कऽ देबा लेल सभ व्यग्र छथि, कऽ रहल छथि। स्वयं मैथिली मे बाजि बाल-बच्चाकेँ मैथिलीसँ दूर रखबाक अभियान चलल अछि आ मास मीडिया, कार्टून चैनल आ शिक्षा-प्रणालीक संग एकर खाढ़ीमे रहल अत्यधिक प्रयास अपन योगदान देलक अछि। मैथिलीक कार्यकर्ता लोकनिक कएक धूनमे बँटल रहबाक कारण समर्थनयुक्त लोबिङ्ग करबाक अभाव अछि। क बदला अपन/ अपन लोकक की लाभ, ऐ लेल लोक बेसी चिन्तित छथि।

मैथिली छात्रक संख्याक अनुपातक कारणेँ उत्पाद उद्यम रहला उत्तर सेहो विक्रय कौशलक अनुपात बढ़ि जाइत। मैथिलीमे उद्यम उत्पादक अनुपात तँ अछिए, विक्रयकौशलक सेहो अनुपात अछि।

मैथिलीक सन्दर्भमे बाल साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

बाल साहित्य लेखकसँ अनुरोध जे ढ आ ऽ क प्रयोग करथि जाहिसँ बच्चाकेँ सुविधा होएत। ऐ बाल साहित्यमे लिखल जा सकैए। रोढ़ लिखल जएबाक चाही, रोग नै। होर छनि , कहलनि केँ बच्चा ग्रामसँ छनी, कहलनी पढ़ैए, वर्कशायमे एहन देखल गेल; स छन्हि, कहलन्हि आदिक प्रयोग करू। मैथिली बाल साहित्यक लेखनमे संयुक्ताक्षर, आ ढ क प्रयोग भाषाक विशिष्टता कारणे रखबामे सहायक होएत।

तहिना सरल शब्द मुदा खाँटी मैथिली शब्द जेना अकारान्तक आदिक प्रयोग करू। बाल साहित्यमे गद्य आ पद्य दुनू महत्वपूर्ण अछि जेँ कही तँ पद्य कने बेसिये। गद्यमे कथामे विषयक समावेश जेना विज्ञान, समाज विज्ञान आदि देलासँ मनोरंजन आ शिक्षाक मध्य तालमेल भऽ सकत। मैथिलीमे बालकथा कएक नागि धनि बनौने अछि तँ पैघ लोकक कथा मिनटमे सेहो खतम भऽ जाइत अछि। मैथिलीमे चित्र-शृंखला, चित्रकथा, विज्ञान, समाज विज्ञान, आख्यान, यौगिक, रसायन, जीव, स्वास्थ्य आदिक पोथीक अनुपात अछि। संस्था विद्यालय आ चित्रकला-संगीतक माध्यमसँ शिक्षा नै देल जा रहल अछि। दूरस्थ शिक्षाक माध्यमसँ/ अन्तर्जालक माध्यमसँ मैथिलीक पढ़ाइक अत्यधिक आवश्यकता अछि। सङ्ग मैथिली लेल सरल

प्रदेशमे अग्नि छन्हि, से ओ परस्पर एक दोसराक विरोधी किए न होथु। लोकक बीचमे ई भाषाक आरोह, अवरोह आ भाषिक वैशिष्ट्यकेँ लऽ कऽ आदर अछि आ ई मे मैथिली ने बजनिहार भाषाविद् सम्मिलित छथि। आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्त्वक कारण सेहो मैथिली महत्त्वपूर्ण अछि। ई भाषामे एकटा आन्तरिक शक्ति छै। बहुत रास संस्था, जाहिमे किछु जातिवादी आ सांप्रदायिक संस्था सेहो सम्मिलित अछि, एकर विकास लेल तत्पर अछि। ई भाषाक जननिहार भारत आ नेपाल दु देशमे तँ रहैत छथि आर आन-आन देश-प्रदेशमे सेहो पसरल छथि।

शंकराचार्यक विषयमे कहल गेल जे ओ अपन कमंडलमे ज्ञान भरि लेलन्हि। भेल ई जे बाढ़िमे बीचमे पड़ाउ रहबाक कारण एक दिस बाढ़ि अबैत छल आ एक दिस दाही। बीचक गुरुकेँ शंकर अपन शिष्यक सहयोगसँ पाटि जखन कमण्डल लेने बहराएलाह तँ लोक देखलक जे दोसर कात पानि आबि रहल अछि। सभ शंकराचार्यक स्तुति कएलन्हि जे अहाँ अपन कमंडलमे ज्ञान आनि हमरा सभकेँ दाहीसँ आ दोसर कातक लोककेँ बाढ़िसँ मुक्त कराओल। अहाँ कमण्डलमे पानि आ ज्ञान अनलौं! बादमे अवसरवादी लोकनि एकरा चमत्कारसँ जोड़ि देलक। आशा अछि जे मैथिली बाल साहित्य लेखक सेहो अपन लेखमे उगनाक कथाक तर्क आ श्रद्धासँ विवेचना करता। गोनू झाक गाम भरौड़ाक राजकुमार "बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल" लोककथाक मल्लाह कथानायक राजकुमार दुलरा दयाल, भरौड़ामे एखनो हिनकर गहवर छन्हि। मैथिली बाल साहित्य लेखक गोनूसँ आगू ईहो देखथु। प्रजातिमे कथानक संग चरित्र-चित्रण,

पद्य-रचना, निबन्ध गद्य, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। बाल साहित्यमे प्रगति नै भेलए, ओहुना विचारकेँ हमर समर्थन नै अछि, समाजक निम्न वर्ग वा अस्पृश्य वर्गक लोकवेदना सेहो कोना अस्पृश्य रहि गेल से बच्चाकेँ बुझबैत पड़त। मुदा बुझबैक ढंग एहन होबाक चाही जे बच्चा अपन धरोहरकेँ बीछि सकए, ओकर आदर कऽ सकए। मिथिलाक लोककथामे जाति-पाति नै होइ छै, साम्प्रदायिकता नै होइ छै। गोनू झाक समयमे मुस्लिम मिथिलामे आएल नै रहथि तखन मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचारक कथा गोनू झाक खिस्सामे कोना घुसिआएल से रहल अछि।
कंप्यूटर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो प्रोग्रामक निर्माण ओकर निर्माता कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ प्रोग्राम अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहेन कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै कएने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-प्रोग्राम जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ ओ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा प्रोग्राम अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जँ ओकरा सँ सेहो ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्यूटरक बैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट ! बाल साहित्य सेहो एहन प्रोग्राम अछि जे बाल मनपर अंकित भऽ जाइत अछि, मुदा एतऽ फॉर्मेट करबाक विकल्प नै छै। तेँ बाल साहित्यक निर्माणमे सतर्की आवश्यक अछि, सावधानी आवश्यक अछि। उमेरक हिसाबसँ बाल साहित्यक वर्गीकरण आ ओकर समीक्षा होबाक चाही। शिशु (०-५ वर्ष), बाल (५-१२ वर्ष) आ किशोर (१२-१८ वर्ष) उमेर मध्य बाल

साहित्यक वर्गीकरण कऽ एकर समीक्षा समीचीन हएत। चित्रकथा पाँच वर्खसँ छोट बच्चा लेल नवल साहित्य होइत अछि, जे स्कूल जाइसँ पहिल अभिभावक द्वारा पढ़ाओल जाइत अछि। अभिभावक बच्चाकेँ कथा पढ़ि कऽ सुनाबै छथि आ बच्चा चित्रक माध्यमसँ ओकर अनुभव करैए। बच्चाक तीव्र मानसिक विकास एकर परिणामस्वरूप होइत अछि। जखन बच्चा स्कूल जाए लगैए आ वर्णमाला सीखि लैए तखन ओ छोट पोथी सभ अपने पढ़ऽ लगैए आ एकर संग आन आन पाठ्यपुस्तक आ चित्रित पोथी सभ पढ़ऽ लगैए। सात वर्खक बाद ओ छोट-छोट अध्यायवला पोथी आ नौ-दस वर्खसँ पैघ-पैघ अध्याय वला पोथी पढ़ऽ लगैए। बारह वर्खक बाद बाल उपन्यास आदिक अध्ययन बच्चा सभ शुरू कऽ दैए। बाल साहित्यमे पारम्परिक लोककथा, इतिहास-महाकाव्यक कथा आदि सुनाओल जाइत अछि। साहसिक आ प्रेरणादायक जीवनी आ नीति-परक कथा सेहो बाल साहित्यक अन्तर्गत अबैए। परीकथा, जादू, गीत आदिक माध्यमसँ सार्थक बाल साहित्यक निर्माण होइए। तँ बाल साहित्यक समीक्षामे बाल साहित्यक प्रकाशन सेहो ध्यान देबए पड़त। की बाल साहित्य अन्धविश्वासकेँ बढ़ावा तँ नै दऽ रहल अछि? की बाल साहित्य अपन धनाढ्यकेँ चिह्नबामे बच्चाकेँ सहयोग दऽ रहल अछि? की बच्चामे मानव मूल्यक स्थान ई साहित्यकेँ पढ़बासँ एतै? की जातिवादी आ वैज्ञानिक कल्पनाक विरुद्ध बच्चाकेँ प्रशिक्षित करबाक उद्देश्यमे बाल साहित्य सफल भऽ रहल अछि? वैज्ञानिक तनाव पसरबाक तँ नै भऽ रहल अछि, बच्चाक स्वस्थ मनोरंजनमे कोनो कल्पना तँ सायास-अनायास नै घूसि गेल अछि? सरल शब्दावली,

सरल भाषा आ सरल विचार वाला साहित्यिक उत्कृष्टताक लेल कसौटी बनत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.२.अंक ३१८ पर टिप्पणी

लक्ष्मण झा 'सागर'

नीक अंक, बधाई।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-डी एल एड बनाम बी एड

२.३.लालदेव कामत-गढ़बिनौलीक समाज/ स्वनाम धन्य सितामढ़ी/ साहित्य रत्न अनूप लाल मंडल/ पुस्तक चर्चा- दुध बकरी/ (0हा परक मौलायल गाछ

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२८)

२.५.नन्द विलास राय-छुछुनैर

२.६.कुमार मनोज कश्यप- लघुकथा- सादृश्यता

२.७.नवीन्द्र नारायण मिश्र-(एहन पनक मौलाएल गाछ (उपन्यास)- धारावाहिक

२.८.किशन कारीगर-पुरस्कारी गुर्गा पुरस्कार बँटा उठौत (हास्य कटाउ)

२.९.संतोष कुमार राय 'बटोही'- एकटा संस्मरण- काकी : गुल्ली दनी

२.१.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य (आगाँ)



(𑒢𑒰𑒧- 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝 (1930) 𑒣𑒱𑒞𑒰- 𑒮𑓂𑒫०𑒣𑒩𑒬𑒳𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒑𑒰𑒿𑒫- 𑒒𑒼𑒒𑒹𑒮𑒩. 𑒣𑒼०- 𑒥𑒱𑒩𑒾𑒪. 𑒖𑒱𑒪𑒰- 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰- 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩. CAIIB. 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞- 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏 𑒮𑒹𑒢𑓂𑒙𑓂𑒩𑒪 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒂𑒿𑒤 𑒃𑓀𑒛𑒱𑒨𑒰)

𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨

𑒣𑒠𑓂𑒧 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑒮𑒼𑒪𑒯𑒧𑓂 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲! 𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒪𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒥𑒞𑒰𑒨𑒥, 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒑𑒳𑒩𑓂𑒖𑒩 𑒧𑓀𑒛𑒪 𑒧𑒹 𑒮𑒾𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒑𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒐𑒛𑓂𑒑𑒥𑒰𑒯𑒳 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒮𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣𑒲 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒋 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒧𑒠 𑒮𑒿 𑒅𑒢𑓂𑒧𑒞𑓂𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒋𑒯𑒱 𑒯𑒰𑒟𑒲𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒁𑒩𑒱𑒧𑒩𑓂𑒠𑒢 𑒕𑒪। 𑒉𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒋 𑒯𑒚𑒰𑒞 𑒮𑒰𑒿𑒏𑒩 𑒂 𑒪𑒼𑒯𑒰𑒏 𑒐𑒰𑒧 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒱-𑒤𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪। 𑒣𑒲𑒪𑒫𑒰𑒢 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒠𑒱𑒬 𑒁𑓀𑒏𑒳𑒬 𑒪𑒅 𑒏𑒹 𑒛𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡𑒫𑒬 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒁𑒫𑒯𑒹𑒪𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒯𑒅 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒯𑒟𑒱𑒮𑒰𑒩 𑒑𑒱𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒔𑒰𑒩𑒴 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒦𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒣𑒲𑒪𑒫𑒰𑒢 𑒛𑒩𑒪 𑒕𑒪। 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒛𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒨𑒞 𑒕𑒪। 𑒃 𑒏𑒾𑒞𑒴𑒯𑒪𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒰𑒥𑒅 𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒯𑒱𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩-𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒉𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒋 𑒥𑒪𑒫𑒰𑒢 𑒠𑒿𑒞𑒻𑒪 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒰𑒧 𑒡𑓀𑒡𑒰𑒏 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒩𑒕𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒛𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒔𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒴𑒩 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑒅 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒦𑒨𑓀𑒏𑒩 𑒑𑒖𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒪।

तखन कोनो चाक्षण तालाब सँ नहा कऽ ओहि मार्ग सँ लौटैत छलाह। ओ गीताक सोलहम अध्यायक किछु श्लोकक जप कऽ रहल छलाह। गाँवक लोकनि आ पीलवान केँ मना केलाक बादो ओ किनको बात नहि मानलथि। हुनका हाथी सँ डर नहि छलनि तेँ ओ विचलित नहि भेलाह। ओम्हर हाथी अपना चिघाड़ सँ चारू दिशा सब लोकनि केँ नचनि रहल छल। ओ चाक्षण मदमस्त हाथी केँ हाथ सँ छू केँ लालनपूर्वक निकलि गेलाह। ओहि सँ राजा आ गाँवक लोकनि सब केँ मन मे एतेक विस्मय भेलनि जकर वर्णन नहि भऽ सकैत अछि। राजाक कमलनयन चकित भऽ रहल छल। ओ चाक्षण केँ सोना सवारी सँ उतरि हुनका प्रणाम कऽ पूछलथीन- यौ चाक्षण! आइ अहाँ जा अलौकिक काम केलहुँ अछि किएक तऽ एहि काल सन भयंकर गजराजक सोझा सँ अहाँ सकुशल आबि गेलहुँ अछि। हे प्रभो! अपनेक कोन देवताक पूजन आ कोन मंत्रक जाप करैत छी? से बताउ, अपनेक कोन सिद्धि प्राप्त केने छी?

चाक्षण कहलनि - राजन! हम सब दिन गीताक सोलहम अध्यायक किछु श्लोकक जप करैत छी जाहि सँ ई सिद्धि प्राप्त भेल अछि।

श्री महादेव जी कहलनि - तहन हाथीक कौतूहल देखबाक इच्छा छोड़ि राजा चाक्षण देव केँ संग लऽ अपना महलमे आबि गेलाह। ओहि ठाम शुभ मुहूर्त देखि एक लाख स्वर्णमुद्रा दक्षिणा दऽ चाक्षण केँ संतुष्ट केलनि आ हुनका सँ गीता मंत्रक शिक्षा लेलनि। गीताक सोलहम अध्यायक किछु श्लोकक अभ्यास कऽ लेलाक बाद हुनका मन मे हाथीक छोड़ि ओकर कौतुक देखऽ केँ इच्छा जागृत भेलनि। एक दिन सैनिकक संग बाहर निकलि राजा पीलवान सँ ओहि उन्मत्त गजराज केँ बन्धन मुक्त केलनि। ओ डरक बात बिसरि गेलथि। राज्यक सुख विलासक प्रति आदरक भाव नहि रहलनि। ओ अपन जीवन तृणवत समझि हाथीक सोझा मे चलि गेलाह। साहसी लोकनि मे अग्रगण्य राजा खड्गबाहु

𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒏𑓄 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒢𑒑 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒧𑒠𑒏 𑒁𑒢𑒫𑒩𑒞 𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒍𑒏𑒩 𑒑𑒝𑓂𑒛𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒟 𑒮𑒿 𑒕𑒳𑒥 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯।

𑒏𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒳𑒐 𑒮𑒿 𑒡𑒰𑒩𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒂 𑒂𑒢𑒏 𑒧𑒳𑒐 𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒡𑒳 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒦𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒖𑒩𑒰𑒖𑒏 𑒧𑒳𑒐 𑒮𑒿 𑒥𑒿𑒔𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒋𑒪𑒰𑒯। 𑒢𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒋𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒍 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒮𑒱𑓀𑒯𑒰𑒮𑒢 𑒣𑒩 𑒁𑒦𑒱𑒭𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒪𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒖𑒣 𑒏𑓄 𑒣𑒩𑒧𑒑𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱।



(𑒢𑒰𑒧- 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝 (𑓑𑓙𑓓𑓐) 𑒣𑒱𑒞𑒰- 𑒮𑓂𑒫𑓐 𑒣𑒩𑒬𑒳𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒑𑒰𑒿𑒫- 𑒒𑒼𑒒𑒹𑒮𑒩. 𑒣𑒼𑓐- 𑒥𑒱𑒩𑒾𑒪. 𑒖𑒱𑒪𑒰- 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰- 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩. CAIIB. 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞- 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏 𑒮𑒹𑒢𑓂𑒙𑓂𑒩𑒪 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒂𑒿𑒤 𑒃𑓀𑒛𑒱𑒨𑒰)

𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨

(𑒣𑒠𑓂𑒧𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛)

𑒮𑒞𑓂𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱- 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲! 𑒯𑒧 𑒮𑒼𑒪𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒥𑒞𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒞𑓂𑒩𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒁𑒢𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒫𑒝 𑒏𑒩𑒴। 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒐𑒛𑓂𑒑𑒥𑒰𑒯𑒳𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒳𑓁𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒾𑒏𑒩 𑒕𑒪। 𑒍 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒼𑒙𑒱 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒏 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩𑒱 𑒍 𑒧𑒰𑒝𑓂𑒛𑒪𑒱𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒜𑒹𑒩 𑒡𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒪𑒑𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒣𑒩 𑒔𑒜𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹𑒏 𑒏𑒠𑒧 𑒂𑒑𑒴 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒮𑒿 𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒫𑒖𑒴𑒠 𑒍 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒼𑒩-𑒖𑒼𑒩 𑒮𑒿 𑒏𑒚𑒼𑒩 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒏𑒯𑒅 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒏𑒩 𑒂𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡 𑒮𑒿 𑒂𑒢𑓂𑒯𑒩 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒂𑒍𑒩 𑒣𑒰𑒨𑒩 𑒣𑒱𑒮𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒣𑒩 𑒐𑒮𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒰𑒯 𑒠𑒳𑓁𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒐𑒮𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒰𑒿𑒮 𑒪𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒢 𑒫𑒱𑒏𑒩𑒰𑒪 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒏𑓂𑒩𑒼𑒡 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒆𑒣𑒩 𑒤𑒹𑒏𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒆𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒐𑒮𑒻𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒬 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒟𑒲𑒏 𑒨𑒼𑒢𑒱 𑒧𑒹 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒂𑒍𑒩 𑒮𑒱𑓀𑒯𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒲𑒣𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒪𑒑 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒞𑒲𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱।

𑒮𑒱𑓀𑒯𑒪𑒠𑓂𑒫𑒲𑒣𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒐𑒛𑓂𑒑𑒥𑒰𑒯𑒳 𑒮𑒿 𑒒𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒖𑒪 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒿 𑒯𑒰𑒟𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒹𑒖 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒬𑓂𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙 𑒦𑓄 𑒏𑒼𑒢𑒼

করি কেঁ পুরস্কারস্বরূপ মে ও হাথী দঽ দেলথিন। ও সভ স্বর্ণ মুদ্রা লঽ ওকরা মানব নরেশক হাথ বেঁচি দেলথিন। কিছু সময ব্যতীত ভেলা পর ও হাথী অসাধ্য জ্বর সঁ গ্রসিত ভঽ মরণাসন্ন ভঽ গেল। পীলবান জখন এহন শোচনীয় অবস্থা মে হাথী কেঁ দেখি রাজা লগ জা কেঁ হাথীক হিত কে লেল সব হাল সুনেলথিন- মহারাজ! অপনেক হাথী অস্বস্থ ভূমি পড়ৈত অছি। ওকর খানা পীনা আ স্বতন্ত্রতা সব ছুটি গেল অছি। হমরা সমঝ মে নহি আবৈত অছি জে একর কোন কারণ অছি।

পীলবানক বতাওল সমাচার সুনি রাজা হাথীক রোগক জানকার চিকিৎসাকুশল মংত্রীক সংগ ওহি ঠাম গেলথি জাহি ঠাম হাথী জ্বর গ্রস্ত পড়ল ছল। রাজাক দেখৈত ও জ্বর জনিত বেদনা কেঁ ছোড়ি সংসার কেঁ আশ্চর্য মে ডালঽ বালা বাণী মে কহলক- সমস্ত শাস্ত্রক জ্ঞাতা, রাজনীতিক সাগর, প্রজা-সমুদায় কেঁ পোষণ করঽ বালা আ ভগবান বিষ্ণুক চরণক অনুরাগী মহারাজ! এহি ঔষধি সঁ কী লেবঽক অছি? বৈদ্য সঁ সেহো কিছু লাভ নহি হোয়ত। দান আ জাপ সঁ কী সিদ্ধ হোয়ত? কৃপা কঽ অহাঁ গীতাক সতরহম অধ্যায়ক পাঠ করঽ বালা কোনো ব্রাহ্মণ কেঁ বজাউ।

হাথীক কথনানুসার রাজা সব কিছু ওহিনা কেলথি। তদনুর গীতা পাঠ করঽ বালা ব্রাহ্মণ জখন জল কেঁ অভিমংত্রিত কঽ ওকরা পর ডাললথিন তহন দুঃশাসন গজযোনি পরিত্যাগ কঽ মুক্ত ভঽ গেলাহ। রাজা দুঃশাসন কেঁ দিব্য বিমান পর বৈসল আ ইন্দ্র সন তেজস্বী দেখি পুছলথিন- অহাঁক পূর্বজন্ম মে কোন জাতি ছল? কী স্বরূপ ছল? কেহন আচরণ ছল? আ কোন কর্ম সঁ অহাঁ এহি ঠাম হাথী বনি অয়লহুঁ অছি? ঈ সব বাত হমরা বতাউ। রাজা কেঁ এনা পুছলা পর সংকট সঁ মুক্ত দুঃশাসন বিমান পর বৈসল-বৈসল স্থির ভঽ অপন যথারথ সব বাত কহলথিন। তৎপশ্চাৎ নরশ্রেষ্ঠ মানব নরেশ সেহো গীতাক সতরহম অধ্যায়ক জপ করঽ লগলাহ। জাহি সঁ থোড়েক সময মে হুনকা মুক্তি মিল গেলনি।

—— 0 ——

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.आचार्य रामानंद मंडल-डी एल एड बनाम बी एड



आचार्य रामानंद मंडल-डी एल एड बनाम बी एड

डी एल एड बनाम बी एड

सर्वोच्च न्यायालय के एकटा फैसला के अनुसार वर्ग १ स ५ वा लेवल -१ मे बी एड योग्यताधारी के बहाली न होयत बल्कि डी एल एड योग्यताधारी के बहाली होयत। अर्थात प्राथमिक विद्यालय मे शिक्षक केवल डीएलएड योग्यताधारी के होयत। परंतु प्रारंभिक विद्यालय जेम वर्ग -१ स ८ तक पढाई हो छैय ताम वर्ग १स५ लेवल -१ तक डीएलएड योग्यताधारी के बहाली आ ६स ८ लेवल -२तक बीएड योग्यताधारी के बहाली होयत।

ध्यातव्य सर्वशिक्षा अभियान के पहिले के मध्य विद्यालय मे बीए आ बीएससी के पद तक न सृजित हुय आ अभियान के बाद

वाला सृजित मध्य विद्यालय मे स्नातक शिक्षक नै छथि। त वर्ग -६ स ८ तक मे कोन शिक्षक पढ़ौता। टी०ई०टी० पात्रताधारी त अनुपयुक्त होयत। परन्तु व्यवहार मे वर्ग-६स ८ वा लेवल -२ मे टी०ई०टी० पात्रताधारी शिक्षक पढ़ा रहल छथि।

दोसर बात टी०ई०टी० पात्रताधारी के प्रमाणन स्नातक प्रशिक्षित पद पर कोना प्रमाणन होयत। जौं प्रवेश पद पर अनुपयुक्त छथि। जौं होयत त गुणात्मक शिक्षक आ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कोना प्राप्त होयत।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सह साहित्यकार सीतामढ़ी।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजधन मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी १९६० पात्रता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। कवि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता -कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रासा के न बांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-*

सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-ramanandmandal001@gmail.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.लालदेव कामत-गढ़बिनौलीक स्मरण/ स्वनाम धन्य सितामढ़ी/ साहित्य रत्न अनूप लाल मंडल/ पुस्तक चर्चा- दुःख मोचनी/ ठेहा परक मौलायल गाछ



लालदेव कामत-गढ़बिनौलीक स्मरण/ स्वनाम धन्य सितामढ़ी/ साहित्य रत्न अनूप लाल मंडल/ पुस्तक चर्चा- दुःख मोचनी/ ठेहा परक मौलायल गाछ

१

गढ़बिनौलीक स्मरण

९0क दशकम हम विनाना आश्रम स्कूल क' सहायक प्रकल्प अधिकारी छलहुँ। ओहि समय ७न सी आन ठी -नागयून कन सक्काटनी ताOनाम काल जी जनौन नहथि, जाय आदिनासी लाकसंख्याँ २0वर्ष युर्व जनगणना मँ निनल नहय;आ ओहीOाम शिआक अलख जगवाक लल नाग्रासरा सदस्य शुश्री निर्मला दशयांत जी वीडा उOौलिह अछि। स अहीं विहानी सिधेशन नाम ,सुराष गुप्ता आ नानायण श्रमिक कन ऊग्र यर्यनऊण धनि कनय सँ आनासीय आश्रमशाला क' काज आगू वढा। ओहिOाम प्रकाश राज्जी आ दिनश मंडल क'वाद अर्जुन राज्जी काज देखैत छैक, ज शिऊक सामनकन कन संग नक्सली नानदात सँ सहमि गेलैक या। ओाय विहानक निजय आर्य नक्सली कन सर्वश्रना छथि। स lOक वढ नशी ओही दुर्गम ज्जलाकाम घटना हाज्जत नहैक। गत शुक्रनान कँ यूलिश 'क सीO ६0कमांडाक संग मुOरडमा१३नक्सली मानल गेल,ज गढचिनौली जिलाक यूलिस उय महानिनीऊक कन हनालसँ मीडिया मँ ज्जी ' खवन आयल। ७टायल्लिक कारमी लग जंगलमँ ७क वैसक लल नक्सलाज्जीट जमा रल नहैक। आलायल्ली गांदल ,अहनी गलनाडा,गेदा हडनी आ विनागुण्डाम हम डढशाल नहि गुजन कारन छी। वढ मान यडत य.....!अहिंसक नवनाम्रक समाज कन कामकाज सहा हमना जीननम निर्रिकाग आनलक। महानाष्ट्र नाग्र कन निदर्र ज्जलाकाम चन्द्रयून जिला सँ १६ अगस्त १९८२ कँ रूट ८0किमीOदून गढचिनौली जिला वनलै। नागयून शहन सँ १८0 किमीO दूनी यडैत छैक। वन, यहाड आ नदीक वहुतायत दुर्गम

ऊग्र मेँ हाथीक मूंड गवाही मचवैत नहैत छैक। एकरा साउनता दस ६०प्रतिशतक लगभक आ २ लोकसभा आ ३ विधानसभा ऊग्रम १४,४१२ वर्ग किमी ऊग्रहल छैक। १२२ गाम नदी - नाला सँ प्रभावित नहैत जाहिम ६ गाम उपर यहाड़ी यत बसल छैक,ज चारूदिस सँ जलाशय सँ मानसून अपलायन घना जाइछि। गँ विधागुंता ,तुनमार्का , दमनमार्का , कानाकाठी, यनिमलनद्दी ,हातवाना,सन गामक आदिवासी लोक आ सनकारी स्थारु छ: मासक नशदयानि यहिल सँ शमन नहैत य। श्री एनिया प्राकृतिक मनानम छँटा समटन अपन आयम अनोखा अछि। वृर्गी आ सूनजागढ यहान छत्तीसगढ आ तेलंगाना नाथ सँ सीमा मिलैत मनाठीक संग आना काका राषा राषीक' गंगायमूनी संस्कृति संजागत छैक।

२

स्वनाम धन्य शिक्षामंत्री

प्रा० जगदीश नानायण चौधनी जीक जन्म मधुवनी जिलाक विक्रमशेन गाममे 10अक्टूवन 1928 ई० म भेल छलनि। श्री हिन्दी साहित्य आ संस्कृत - अंग्रेजी आउान मैथिलीक बैघ विद्वान छलाह। जे० एन० कालेज- मधुवनीक प्राचार्य नहथि। संगहि अध्यात्मिक प्रवृत्तिक वैष्णव छलाह। राजन सँ पूर्व वद्धादन धनि पूजा आ ध्यान कनथि। सन् 1953 मेँ हिन्दी विषय सँ कवट जातिक यहिल एम० ए० भेलाह। हिनक जाहि यनिवेश म जनम भेल तहिकाल सँ अध्ययन एहि समाजक विद्यार्थी जौ' द्वितीय श्रेणी सँ उत्तीर्ण हायत छैक गँ

बूझू जे सम्पन्न परिवार वर्गक विद्यार्थीक प्रथमश्रेणीक समान छात्रवृत्ति। ओ दिनका 1947 मे मैट्रिक 51% सँ डिप0इन0एड0 1959 ई0 52% धरि सफल तिनिजन छात्र रहलैक। आई0 ए0 1949 म 51% बी0ए0 आनर्स हिन्दी 1951 म 56% अंक सब शिक्षा पटना विश्वविद्यालयक अधिन छल रहैक। 1942 ई0 केर भारत छात्र आन्दोलन म सक्रिय भूमिका निभेलनि वर्षावर्ष भूमिगत, स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेंशन भेटि रहलाह। 1946 स 52 धरि खजौली थाना कांग्रेस कमिटीक सदस्य रहलाह। 1947 मे पतौल सत्याग्रह म गिरफ्तार भेलासन्ता मांग पूर्ण भेलापर स्वाधिनता पर रिहा भेलाह। कांग्रेस आजादी प्राप्ति लेल गठित छल रहय तँ 1952 म ओहिसँ इस्तीफा दैत पी0एसपी केर सदस्यता ग्रहण कयल। 1953 सँ 17-06-1959 किसान उवि बथनाहा (ससुनाइन ग्राम) मे प्रधानाध्यापक आ 1959 मे जगदीश नन्दन कॉलेजक हिंदी व्याख्याताक कार्य भार ग्रहण कलनि। 1971 मे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी सँ संमानपूर्न, मधुबनी पूर्वी क्षेत्र सँ संसद केर चुनाव मे 32 हजार सँवसी वोट आनलनि। 1972 म दरभंगा जिला संयुक्त समाजवादी पार्टी क' जिलाध्यक्ष निर्वाचित भेलाह जे मधुबनी जिला बनलापर कायम रहलाह। 1975 मे मीसाकेर तहत भूमिगत भऽ प्रशिक्षक केर काज नव कार्यकर्ताक मार्गदर्शक रहलाह। 1977 मे जनता पार्टी सँ संमानपूर्न विधानसभा क्षेत्र सँ चुनाव डॉ0 जगन्नाथ मिश्र तत्कालीन मुख्यमंत्री विरुद्ध लड़लाह आ 25 हजार क लगभग मत प्राप्त कलिन। व्यापक धांधली सँ चुनाव मेँ पराजक भेलैक। 1978 मे जनता पार्टीक राज्य कार्यकारिणी डेलीगेट भेलाह जे जनता दल

करैत काल धरि सक्रिय कार्यपालक भूमिका निर्वहन मे लागल रहलाह। एहि साल ओ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक सीनेट सदस्य निर्वाचित सेहो भेलाह। 14 नवंबर 1980 के रीडर (उपाचार्य पद पर) मे प्रोन्नति भेलाह। 1 जनवरी 1985 कँ प्रिंसिपल (प्रोफेसर) केर पद पर प्रोन्नति पाबलनि जाहि सँ पूर्व 1 जनवरी 1984 सँ प्रधानाचार्य के रूप मे कार्यरत रहथि।

समाजिक असमानता आ आन कुरीतिक खिलाफ हरदम सक्रिय प्रयास अपना जीवन काल करैत रहलाह। अपना गाम मे 1953 मे मध्य विद्यालय स्थापना कयलनि। तथापि मे हाईस्कूल खोलबाक मुख्य भूमिका आ संचालन करैत रहलाह। तत्कालीन अतिरिक्त 10 साल बाद 1969 मे दानवारीहाट (खूटौना) मे महाविद्यालय स्थापना संचालन मे प्रमुख दायित्व निर्वहलथि। 1974 सँ राज्य सरकार द्वारा अधिग्रहण भयबा धरि मृत्युपर्यन्त जनता उच्च विद्यालयक सचिव पद पर संचालन करैत रहलाह। क्रिमिनल परिवार मे कतेक ठाम बजरंगलैक मे खुनी संघर्ष के रुकियबा मे समय देत शांति व्यवस्था स्थापित करबा मे सेहो यशस्वी बनलनि।

मधुबनी (बिहार) सँ 2000 मे राजद के विधायक प्रो. चौधरी जी 90 के दशक मे कांग्रेस पार्टी सँ मधुबनी लोकसभा क्षेत्रक चुनाव लड़ि हारल मे कांग्रेसक हारय वाला उम्मीदवार मे सबसँ बेसी वोट पाबियो दोसर बेर टिकट सँ वंचित नहि भेलाह। एकर बाद जार्ज फर्नांडिस कँ कहब पर समता पार्टी सँ पुनः लोकसभा मधुबनी क्षेत्र सँ चुनाव लड़ि अढ़ाई लाखक लगभग निर्णायक वोट बटोरलनि। 2005 मे समता पार्टीक टिकट लौटाबैत एहियाँनिक

लखक श्री जगदीश वाबू लल एहि जग सँ हटि गेल। चौधरी जीक जीवन पर्यन्त अधिक पिछड़ल गनका अपन अस्तित्वक मानैत नहलैक। उना समाजिक आकर्षण हुनका प्रति सब वर्गक रहैक। कॉलजक काना साहित्य निषयक लिजन घंटी क उा उ वथि छात्रगण कँ थथमानथि। ताहि विद्वता लल छात्रगणक नजैन मं श्रेष्ठता मधा ग्रहण कन रहथि। एहन यशस्वी व्यक्तित्वक स्वर्गीय वूलीलाल कामति जीक चतुर्थ सुपुत्रक एहि धना धाम सँ रूख्यानस्था मं 3 जनवरी 2015 क सदाक लल परलोक सिधानव अनवाकम सिनहा दलनि। विनम्र श्रद्धांजलि संग हुनका नाम शत्-शत् नमन।

(1991 मं श्रेष्ठ जगदीश वाबू हमना सन अदना आदमीक वूलाना यन सहज आवि जिला स्तरीय नहरू युवा कंद्र नाॅलीनाल खलकन टूर्नामेंटक उद्घाटन कयन नहथि स हुनक महानता चिनस्मनणीय नहत)

३

साहित्य नम्र अनूप लाल मंडल

कटिहान जिलाक मौजा समली,टोला चकला मौलानगनम एक किसान श्री लम्बू मनड जीक उहिठाम दि०११/१०/१८९६ई०कँ " याथन यन दूई्ीव जनमल" क शान रहलैक। उहिदिन शिशुरूपेँ अनूप लाल वावूक जन्म रहल छलनि। ताहि सँ पहिल हिनक वहिणक जन्म रहल नहैक, ज मनि चूकल छलैक । वाल अनस्थाम वयखीका र'गेलाह। हिनक पालन पोषण वावा कलथिन आ काका उधो मंडल अपन

सँगामक या0शाला मँ शिआ-दीआ शुरू कलनि। १९०७ई०म निम्न प्राथमिक यनीआ यासकय उच्च प्राथमिक निद्यालय, खैनाम दाखिला लौग १९१०मँ अयन प्राइमनी यनीआ यास कयलन्हि। कनीब ११सालक उमनम अयना गामक प्राथमिक निद्यालय मँ सहायक शिआक'क नाकनी कनय लगलाह। ओहि साल नाजकीय गुरू ट्रेनिंग स्कूल,सहलयून ,पूर्णिया सँ निकर्षक प्रशिआण मँ नाम लिखलनि आ १९१४मँ यनीआणीर्ण हलाह। आब ना उच्च प्राथमिक निद्यालय लक्ष्मीयून का0गोला (कटिहान) मँ प्रधान शिआक'क रूयम नियुक्त कयल गेलाह।एकननाद १९१७मँ शिआक प्रशिआण निद्यालय हानविसगंजम हिन्दी शिआक क'यद यन यागदान कलनि अहिवीच ओ हागलयून ट्रेनिंग स्कूल सँसह ट्रान्स हलाह। यतासी गाम मलहनियाक मध्य निद्यालयम हिन्दी यंडित यदयन नियुक्ति हला सँ लाकमानस वीच यंडितजी नव नाम सँ आह्लादित हाइन नहलाह। नाकनी छानि वनानसम कालिन कनाइ वूनाइ क' अन्य प्रशिआण लौग एकटा स्कूलक स्थायना मलहनियाम कनैग कनघा उद्योग सँ लाकक आर्थिक उन्नति कनय लगलाह, यनंच अर्थाभावम हून अयना हिन्दी शिआक रूयम नाकनी कनय वली इंग्लिश हायस्कूल वाढ़ (यटना) जाय यड़लैन। ईयह निद्यालय क' यनिवर्तित नाम अनुग्रह नानायण सिंह उच्च निद्यालय ह'गेलैक अछि। सन्१९२४ मँ एहि मास्टनीक छाड़ि अनूय लाल मंडलजी की क घाष एकतमी,यटनाम २०टाका मासिक यन हिन्दी शिआक रूय नियुक्त हलाह। एय चानि सालधनि सना दलथि। सन् १९२७ आ २६मँ यटना सीटी जिला स्कूल सँनार्षिक आ यूनक यनीआ दलनि, यनंच सफल नहिँ हलाह। १९२६मँ हिंदी

साहित्य सम्मेलन सँ माध्यमा (विशारद) परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह। ताहि समय १९२८सँ अनूप बाबू साहित्य जगत नामसँ प्रसिद्धि पाबलथि। महानन्द उच्च विद्यालय नवही चाँदी-आनाम बीसटका मासपर हिन्दी शिक्षक पदपर कार्यरत भेलाह। १९२९ मे अमरचंद रेगादन सेठिया विद्यालय बिकानेरमे साठिटका मासिक दरमाहा पर शिक्षक भेलाह, ओहिठाम संध्याकालीन कॉलेजक व्याख्याता पदपर १९३०ई० धरि कार्यरत रहलाह। हिनक जीवन बड़ाँ संघर्षक अपनामसमरान छैक। येघ-येघ पूनस्थान समय पर भेटल छैन। बनारसमे युगान्तर साहित्य मंदिर पुस्तक प्रकाशन एवं विक्री संस्था क'स्थापना कयलन्हि , १९३२मे हुनि सनदाना स्थानान्तरण कर' पड़लपुनम जमलाह । व्यवसायिक काजमे असफल रहलाह आ मान खिन्न भेलासन्ता पढाबि दोकान बान करय पड़लैन। सन् १९४०मेँ गांधी जीक व्यक्तिगत आग्रह पर सत्याग्रहमे गेलाह आ १९४२क'भारत छोड़ो आंदोलनमे सक्रिय भयसँ भाग ललाह।

सन् १९५०ई०मे हिनकर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद-पटनाक प्रकाशन अधिकारी पद पर नियुक्ति भेलनि। ओही कौंसिलक निदेशकगण आचार्य शिवपूजन सहाय, महादेवी वर्मा, डा०हजारी प्र०द्विवेदीसन नामी साहित्यकार'क सानिध्य भेटलैन । हुनकर लेखन आ अध्ययन काज क्रमिक चलैत रहलैक। १९२६ ई०मे जातीय पत्रिका "कौर्त कौमुदी"कर दु साल प्रकाशन कयलन्हि। हुनक पहिल उपन्यास थीक 'निर्वासिता 'सन्१९२१ ई० । द्वितीय "मीमांसा" १९३०मेँ उपन्यास बहरायल जाहि पर १९३९मेँ किशोर साहु 'बहुरानी' फिल्मक निर्माण काज कयल। स्व०रामवृक्ष बेनीपुरी क'

शब्दमे "अनूपजी ३८ दर्जन साहित्यिक कृति गढि रचना संसारमे चानि चान लगेलनि । विश्व विख्यात रेणुजी हिनका सँ प्रेरणा लैत रहलाह आ अपन 'मैला आँचल' उपन्यासक पाण्डुलिपि पढ़िलखिय पटनामे हिनका देखलनि आ आशीर्वाद प्राप्त कयलन्हि। अनूप जीक ओ सनबाय करैत रहथि। २१सितम्बर १९८२कँ सदा लेल ओ अनन्त यात्री भ' ब्रह्मलीन भ' गेलाह, परंच अपना समाजमे ओबीसी० सौंदर्य साहित्य विमर्श लेल वृहद् आयाम द' गेलाह। स्थानीय समाजमे ओबीसी साहित्यिक सशक्त रचनाकार भेलाहकतीन, जे धार्मिक पाखंडवादक पर्दाफाश करैत श्रमक महत्वक स्थापित कयलनि। श्रमशीलजन कँ सबसँ उपर रखैत परजीवी जन्तु सदृश लेल व्यंग्यबाण छोडलैन। ओना तँ ओबीसी साहित्यिक चार्वाक, बुद्ध सँ आनंद मानल गेल हुना। मध्यकालमे कबीर, रैदास, दादू दयाल आ दरिया साहेब धनि ओबीसी लेल लेखन करैत छथि। ओबीसी साहित्य विमर्श मे अनूप बाबूक योगदानक विसारल नहि होयत, कियाक तँ ओ सब विधामे साहित्यकार रूपेँ प्रतिष्ठित छलाह। हिनक रचनाधर्मिता कँ आगू बढ़ाबमे २१वीं सदीक पाँचम दशकक ओबीसी रचनाकार छथि -: डा० नागेंद्र प्रसाद सिंह, डा०ललन प्र०सिंह,डा०हरिनाथ० सिंह , हरि राम सिंह आदि। ओबीसी समीक्षक हरि ना०ठाकुर कँ जखन लाल वृक्षक घटना करहिहान रहे सकैत ए तँ हम ताका नजरिमे कामक दुरदर्शी निमाहल जायत? अ०भा०कैवर्त कल्याण समिति- कोलकाता अनूप बाबू नामपर पूर्णिया विश्वविद्यालय 'क नामकरण हाय, तहि लेल प्रस्तावधनि कयल ग। शत् शत् नमन।

४

पुस्तक चर्चा- दूध बचनी

लखकिय सनाकान सँ ज्ञात जानल पढ़बानल नाम ग्रामक श्री रामविलास साहू मातृभाषा मैथिली लेल अहर्निश सतत छथि ,दूधबचनी कथा संग्रह ल कँ उपलाह अछि। एहि पोथीक आवरण पृष्ठसज्जा मनमोहक अछि ,जहियन प्रकाशन लागल जगह छपल छैक ।पछिला गप्प पर किमत 150 टाका सहित कथाकार सचित्र स्वागत उपनिवय छापल छैक । 112 पृष्ठक एहि पोथिक कँ ISBN प्राप्त रल छैक ।दाम 200 टाका ।एक दर्जन खीसा मं क्रम 9 पर मूल टाइटल , दूध बचनी ,कथा सजानल गेलैक अछि ।एहिसँ पूर्व हिनक अंकुर कथा संग्रह पूर्व मं प्रकाशित भ चुकल छन्हि ।अंशुमान कथा संग्रह अप्रकाशित कृति सेहो निकलय वाला अछि ।ओना हिनकर 2013 मँ पद संग्रह नथक चक्का उलैट चलय वाट 2017 मं काशीक कछेर काव्य संग्रह सेहो निहित्न प्रकाशन सँ निकल छैक 26 मई 2018 कँ दिल्ली: सँ साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुरजी एहि ,,दूधबचनी,, पोथीपर अपन समीक्षात्मक तथ्य परोसनय छैथि ,तथा एहि पोथीकँ न्याय दिअबाक उद्देशसँ वृद्ध चर्चाकनन नैतिकबोध करबैछ । जहिसँ पाठक वर्ग कं कथापनसँगक भावकता सहज रहय। मिथिलांचलम स्थापित कथाकारक लीकसँ हटि कए बड निमन कथा हिनकर हाइस्कूल गेल एकटा अंशत: चर्चा करैत छी। चलित आ पनित कर नाकउकल वहिन निशाक नियाह जाहि बल सँ सम्प म निमनजना र जाइछ स पाठ्यजानीक नहीं चुनाव करै कारक नियति मँ नीता पसैत छैक ,तकर बानगी पाठक कँ देखबा म

अवेँा छैक। यानिवानिक ह्मास आ स्नयं माप्री प्रधानता क दखनाम नीताक चनित विग्रह जीनन्दता यूर्नक कयल गेल अछि ज याठक कँ अध्यायनान्द कथा सँ वाह्नन नहेँा अछि। जखन नृद्धा अनस्था मं नीताक दुनू जोंनां वटा शहनी जीनन अयनावेँा कश्न यनिस्थितियाम द्नक तकतिहान कनय सँ विमुख हाय छैक तँ मायक सजल हृदय निदिर्ह र सामाजिक आशक नाट तार्कें छैक । अयन गाय महीस आ जगह जमीन कंद्र दशनामाम देँा दस समाज सँ आगु अयन जीनन निर्नाह हायनक नाट खाललीह । सामाजिक लाकक लगहेँन गाउ महींस सं दुध आयुर्ति कनगा अवि नहल छलील, तँ द्नक चर्विता नाम दुधवचनी यतै गेलैक। उाना वियाहक वादध सँ श्वसुन हीनालाल दुनू प्राणीक मृ्ृला यन आ मतिछीनू यथिक असमयिक निधन कन वाद 1954मँ उाही नानदीगन प्रान्दन मं काशी नदिक रिषध वाढि सँ सवूटा ०।०वा।० मरेैन गेल नहेैक, गहना आ गया दामी वीस्फ ववकउ अवला मसामात नीता दुनू वीआ कँ दनहेँगा नाखि यढवा मं सामर्थ रलीह। कथाक नव सहुश क ज न्ऽलीका यीढी गमेया जीननसँ यलायननादी र नगन यन रान वनन आधुनिक कहवेँा अछि, उहि याथीक गामक गाछी ,कमतिया हवली ,घूमि गाम चलु ,नीयेँा ,संस्ाऽटिक जैन शिनूनया आमक गाछ ,जनैन ,जहन याठन यढल यूता अयन सिन निषय कालद्रुक सूवा कन्कटल गादानक गाय घूमि घन आयल आशीर्नाद आ ऽी ककन दाख शीर्षक मँ ग्राम्य जिवनक नाचकता सँ रनल छैक, ज याठक वीनू यढन नय नहता।

१।

ठेहा परक मौलायल गाछ

सद्यप्रकाशित एहि मैथिली साहित्य पोथी " ठेहा परक मौलायल गाछ" सामाजिक उपन्यास 'क लेखक नविन्द्र नारायण मिश्र स्वयं प्रकाशक छथि,जे नाओता सँ ७१२ पृष्ठक पहिल संस्करण २०२३ मेँ निकाललाह अछि। ई पोथी ओ अपन जीवन यात्रा'क सहभागिनी श्रीमती आशा मिश्रक समर्पित कयलनि,जाहिक ISBN ९७८९३ १९७३६१६७ देल छन्हि। एहि उपन्यास'क दाम चारिसय टाका छैक। सब मानव क पाँछा एकटा खिस्सा जुड़ल रहैत छैक। स उपन्यासकार स्वयं ओ पोथीम एक नायक छथि। ई मुख्यतः दु परिवारक सुखान्त कथा शुरू करैत दुनू परिवार सँ एक-एक गोट लोक द्वारा दु लोकक हत्या करबाक अलग - अलग घटना देखलाह अछि। स दुखान्त परिदृश्य केँ बाद प्रस्तुत रचना मेँ सौहार्द निश्छल रूप सँ होयबाक ताना-बाना बुनलनि। ईपर आन उपन्यासकार सँ हिनक पृथक वा किछु बढ़य - बढ़य लेखन शैली रहल छन्हि। पाठक पढ़ैत काल देखत जे कथानक केँ उपन्यासकार श्री नविन्द्र नारायण मिश्रजी आगा आगू धीयाकँ संग मिलन आ वृद्धजन लेल स्वयं सहायता संस्था ठाढ़ आ तकर सुव्यवस्थित संचालन देखौने छथि,जे पाठकक चित् केँ शांति प्रदान करैछ। उपन्यासक सौंदर्य बोध एहन छैक जे दु राजकीय सुखी परिवार दिल्लीम एक पड़ोसीक नाते रहैत ,सहमलु र' गेल छैक। उपन्यासक नायक परिजात वर्ग सँ छथि तेँ ताबा - वातानुसार पड़ोसीक अधिक पिछड़ल तबका रूपेँ चिह्न सकैत छी। दुनू परिवार एक वासनाक प्रति सहज निष्ठा सँ समर्पित

बुझाइछ । मिथिलाक गाम सँ पलायन कय शहरमे रहनिहार परिवारक वृद्ध स्थितिक विश्लेषण ओ कथामे भेटैछ। विदेश मे वृद्धजन बड़ा सबक ख्यालसन बुझाइछ । तुलनात्मक अध्ययन लेल एहि उपन्यास सेहो पनक मोनायल गाछ मे अध्येता कँ खूब तथ्य भेटि सकैत छैक । ई उपन्यास समाजमे वृद्धजन प्रति जे आदरो सँ ध्यानक आ मानप्रतिष्ठा कायम रहैक आ तहिमे कमि जे देखलाकिमे आब भेलैक अछि, तकर जीवैत-जागैत उदाहरण थीक सुशील एवं हुनक पत्नी । समाजमे प्राय: ई देखल जाइछ जे जे जनक सन्तान अछि ओ अपन बड़ा बड़ीकँ पाथ बनबाक प्रयासमे लागल रहैछ । आ यदि लिखक पराकाष्ठा पर पहुँचल बड़ा सँ जरुर वृद्ध। अवस्था मे एक हाथ सेवा नहिं भ पबैत छैक तँ बड मानसिक दु:ख पहुँचैत छै। स्त्री पात्र रमा सेन मायक ममता रहनसमेत पुत्र ई० मुरली एवं श्याम इंजिनियर लेल टाँगल रहैत छथि । वर्तमान बाइट.एकाउण्ट .शालिनीक जे प्रत्यक्ष मदैत आ स्वच्छ निवास रखैत समय-समय पर माय बाबू जीक खोज-पूछारि करैत छथि । मुरलीक जन्म समय रमाक हालत नाजुक रहनि । डाक्टर भगवान रहथि,से तत्काल अपन पाकेट सँ टाका कौन्टर पर दैत शल्यक्रिया शुरू कयलनि । सालभरि बाद श्यामक जन्म समय सेहो रमाक खूब परेशानी भेलनि,शिशुक जन्म सँ दू मास पूर्वहि सँ हास्पिटल मे भर्ती मुदा पति महोदय 'क परिवार नियोजनक निर्णयक ज्ञान टालल गेलैक। पाँच साल बाद बड़ी जन्म समाप्य तनहुँ भेलैक। हास्पिटल मे बच्चा-बच्चा दुनू सुरक्षित रहल। बच्चाक पालन पोषण मे मातृत्व अवकाश कर अतिरिक्त समय बाली छल

,स दिल्लीक नाकरी छानवाक धनि निर्णय नहिँ कय पावथि। अध्ययन लल असैन यन लम्बा छुट्टी लन नहय , गाहिम वगन गँ नहिय हायगेक। उना श्वसुन यंतिग जी सँ अयजिग स्रह सहयाग प्राप्त हाळ्ग नहन अयनां सनकानी स्कूल'क शिउक महक वगन पुष्कन कयँ नियमिग हयैग नहन कथूक कमी नहीं खटकलै सुशील वावूकँ। आइक यनिवश म दखल जाअ लागल ज आळ्ली अ, वीअ म ज कालजक खर्चा निद्यार्थी उयन हाय गै ,गै सँ वशी खर्चा आव अहन मैट्रिक म कन्नह - कोचिंग संटन ' क छैक। मुदा वालवद्या कँ उच्च शिउा दियवाम दुनू प्राणी कानू कान - कसन नहि नखलनि। शालिनी यहैग - लिखैग समय नाकठी यकैन लन नहैक। उकन सहयाठी कनल क नहैछ। उगुका सामाजिक प्रथा अछि , वट सासुनम जा वसैग छैक। स व्राह्मणी माय आ क्रिश्चियन वावूक संगान प्रम नियाहम सालिनिक संग मुम्बळ्ळी म नहैछ। उा अक वटी'क जन्म दैछ,जकन नाँउ नाखल गलैक - नम्रगा। शालिनी हिन्दू आ उकन यगि क्रिश्चन धनि वनल नहलै। नियाह गँ दिल्लीम आवि कन नहय,स शालिनीक सासु-श्वसुनक सहमगि नै नहैक। मुनली आ श्याम अमनिका म यैकज यावि ळ्ळजीनियनिंग काजम उागय कअ नागनिक वनिक नहि जाळ्ळीछ। मुनली गँ युकख उनित संग १० साल सँ संग नहैग जीवन गुदश कनैग छल। मुदा श्यामकँ अक प्रमिका धाखा दन नहैक,आव उा हयाय लग सँ लहन चलि गल आ हान सहा सवसँ कम कनय, माय वावू सँ गँ वढ्ग कम कनैग नहैक। अयनां वृढा दुनू दम्यगि सना निवृत्ति यावि दिल्लीय म गीन कमनाक फ्लैटम नहैग या। आव स्वास्थ्य ठीक नै नहैग छैक। अहनम कानू संगान लगम

नै रहुन मात्र पत्नी दुनू प्राणी सदैव मदैत मँ निःस्वार्थ भाव सँ रहनि। हुनका बेटा पुतोहु बंगलोरक अपन मकानमे रहैत छै। बेटा तँ अधिक काल बीताएल रहैछ। एकदिन हृदयघात सँ रमा अचेत भ' गेलायन हास्पिटल म लऽ जा कऽ भर्ती कराओल गेलीह। बेटाक प्रति जे माय बाबुक अनुराग उमरल से दुनू बेटो अमेरिका जाए ल तैयार भेल। शालिनीक फोन एलै हुनका ससुरजी कुकुर मौर्निंग वाककाल ओना सँ बड़नाइ हबकि लेने छलै,से अस्पताल जाकय डाँढ़ीलग आ0 सूइया भोकबय पड़लैन। ससुरजी अस्सा जाए सं पूर्व बेटा बेटाक फोन बाँसिन अबै छैन- टिकट बीजा पासपोर्ट आ आवश्यक पनिचय कार्ड सब डाकिया कँ सौंप लब! हुनाजी अस्सा पहुँच गेल तखन धियान एलैन जे जरूरी कागतक भाली तँ ओतम छूटि गेल रहनि। जहाज छूटबाक हलालनी समय रहै,ता पत्नी अपन कान सँ भँट कनेण झगौण ठा बिसनलहा कागतक भाली दैण जहाज पकड़बाल अनियाइण हलकैन। हुनाजी जहाद सँ सीएटल शहर अहूण सुन्नन लागैण छैन। बेटा हान पन कहलकैन अहाँ सबक ओवित कान सं गेट पन सं ओना आनि हण आ हम किछ दिनकन वाद वाहन सँ ओना पन आयब। ता कथूक दिक्कत ठा नहिं हूअय हण। ठाय बेटा सबसँ भँटघाँट न हागन,ज0का बेटा तीन दिन कम समय ल भटैण छैन। पुनः दिल्ली अयबा सं पूर्व प्रवासी भानतीय सब सँ पार्कमे पनिचय पात्र हाइड्डी छैन। सौहार्द पूर्ण रूप सँ विदाइड्डी सहा पबैण अपन टिकट सँ अयलाह। वायम विमान सँ विदाइड्डक उपहान सब सहा एलै। थाकल ठहियाल रहुन सूति गेलइड्डै स पत्नी,ज0बेटा आ सालनीक

काल यन रानरन नार्गा कनो घन कँ मानयाछ मँ लगे जाऽ्छी छथि। एकटा अनविज्ञान नं० सँ स्थान एलन ज रजी ऽ्न्थ्योनंस कम्प० कन रजी स्थान नार्गा आ गकन ब्राऽ्टसय खाऽ्ल मैसज अनुसान लिंक छविग १०लाख टाका द्धनका खाता सँ दासनक एकान्उटम द्वांसरुन रलान्दन वैंकक मैसज अयलायन अवग खसलाह। यूनः एकटा समाद अवेग छैक आ० लाख टाका रुन खर्च रल अछि । अयन नमाक संग कय जाम वैंक जाऽ् गा छह लाख रुन निकासी कय उआ ललक किया । जांच क्रमम स्थाटा सँ थाह चलल द्धनक अयन छाट वटा आ उाकन प्रेमिका ऽ्ी साऽ्वनक्राऽ्म कन नरुया।

रानगीय समाज मं प्रायः ९०% एरुन यनिवान अछि जिनक संवंधी म रुया ना दुर्घटना सँ अकाल मौग आ यूना यीढी अन्दन जागीय नियाह कन छैक । नजेन उ०कय दखु गँ मागृक,सासून, वहीनक सासून,दीदीक सासून, समधियाना,सनहोऽ्जक नैरुन,मौसिक सासून ,साऽ्वक सासून आ मित्रगक्ष क कूटुंव यनिवान ओ सँ आव स्मयुक्त नहि अछि। गाहि ९०% लाकक स्मानुगि कँ एहि उयन्यास सँ समाकान छैक। खवन वला समयम वचल ९०% यनिवान सहा एरुन व्यथा सँ अक्रान्द नरुग,ऽ्ी समयक प्रवाह थीक। ओ चलैनम आव ०रुनाउ नहि छै, सगग् ओ वानग दुनिया एक खुजली किगावसन दखा यउग। गाहि मर्मक यकै७ ननिष्ठ वावू उयन्यास निधाम ओ कथा कँ दीर्घ नय देग या०क वीच यनासलनि आ आगाह करैग चौवंख नरुवआक लल उजीग्निग प्रनक्ष 'क प्रसान कयलाह अछि। या०क कँ आगुक कथाम आद्धन रल वृद्ध कँ दृष्टिसन साधन हाऽ्छ जीवन

संख्या संख्या। किछु शब्दक पाठक ओ तरहेँ सुधारिक पढथि -:
पृष्ठ सं० १८ म सएक जगह होएत सएह, १३ मेँ सम्भावना लग - सम्भावना, १४ म नन - नैन, ८१-उठाउलिअनि- उठौलियनि, ९४- अवाँज-अवाँक ज, १२१- ठाकना सर- ठाकना सँ, पठठासञ्ञी- पठासिन, १२१- पविकं- पविक' ,१३९- अनाञ्ञी - आयब, पठाङ्गआक- पागाक १३३- दठानआन- दासनाकठ, १३८- करंट - करठ। ओ तरहक मुद्रण त्रुटि सुधारि द्वितीय संस्करण मेँ परिमार्जित होयत विद्यापति जकरी छै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२८)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम. ए., नैहर- खनाजपुर, दरभंगा, सासुर- गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास- राँची, झारखण्ड। झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभागमे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पदसँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

अग्नि शिखा (भाग- २८)

(मूल हिन्दी- स्वर्गीय शिवेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण)

कथा अखन धरि:

समयक पहिया अपन गतिसँ चलैत रहल। दिन राति अन्हार आ इजोत, सांझ उसरल दिन आ सघन कारीराति। ई दूनू संग समयक पहियाक ई मात्र दू टा पाँखि छल। ई दूनू संग अबैत-जाइत रहल, समय बदलैत रहल, कखनो काल इजोत आ कखनो अन्हार मे रानी उर्वशी आ राजा पुरूरवाक जीवन एहि दूनू संग सँ बान्हल नहि छल। ई दूनू संग अलग-अलग रूप मे आबैत-जाइत रहल हुनका सबहक जीवन मे। कखनो दिन, कखनो राति, कखनो अन्हार आ कखनो इजोत, समयक पहिया गतिसँ चलैत रहल। एकर संग हुनकर दाम्पत्य-प्रेम एक बासन क लेल दिन प्रतिदिन बढ़ैत रहल।

हुनका लोकनिक दाम्पत्य प्रेमक प्रथम पुष्प हुनका लोकनिक पारिवारिक वृक्ष मे पुष्पित भेल। राजाक प्रसन्नताक पारावार नहि रहल। राजाक जीवन मे प्रसन्नताक सरिता बहैत रहल, ओ सुख-सरिता मे डुबकी मारैत रहलाह। धीरे-धीरे जेना-जेना समय बढ़ैत गेल, हुनका लोकनिक पारिवारिक उपवन मे सात पुष्प बढ़ैत गेल - श्रुतायु, सत्यायु, रथ, विजय, एवं जय हुनक पारिवारिक उपवन क पुष्पक नाम राखल गेल।

सभ राजकुमार धीरे-धीरे बढ़य लगलाह। हुनका सबहक बाल-सुलभ

किलकारी सँ राज-प्रासाद गुंजायमान होवय लागल। मुदा ने राजा आ ने उर्वशी के ध्यान अपन संतान पर रहनि। राजकुमार सबहक पालन-पोषण में माता-पिताक ध्यान कनेको नहि छलनि। राजकुमारक सबहक पालन-पोषण एवं देखरेख राजमहलक राज-कर्मचारी करैत छल। एहि बच्चा सबहक माता-पिता,धाय,मित्र सबहक कर्तव्य निर्वहन करैत छल राज-कर्मचारी गण। माता-पिता बच्चा सब सँ ध्यान हटा कऽ प्रेम-पीयूष पीबा मे पूर्ण रूप सँ डूबल छलथि। एहि कार्य हेतु मुख्य स्थान छल उपवन एवं कानन के शांतिपूर्ण वातावरण। ओ सायत-संजोग कहियो राजमहल में रहथि, सदिखन हुनक मधुमासक उत्सव चलैत रहैत छलनि। राज्य संचालन एवं प्रशासन के कार्य प्रधान अमात्य कऽ रहल छलथि। राजाक अनुपस्थिति में वैह अप्रत्यक्ष रूप सँ प्रशासनिक सत्ता के प्रयोग कऽ रहल छलाह। आब राजाक प्रेमक चर्चा दिन-राति लोक मे होमय लागल छल। एहन-दाम्पत्य प्रेम ने ओहि समयक समाज मे कहियो देखल गेल छल आ ने पूर्व कालक कोनो कथा में सुनल गेल छल। सब कियो राजाक भाग्य के प्रशंसा करैथि। कारण स्वर्ग के अप्सरा हुनक पत्नी छलथि आ हुनक प्रेमकथा सन प्रेम कोनो दंपति के मध्य नहि सुनल गेल आर देखल गेल छल। परन्तु किछु लोक सब राजाक आलोचना सेहो करैत छल, किएक तऽ शासन-प्रशासन दिस ध्यान नहि देल जाइत छल राजा के द्वारा,मुदा ओहेन आलोचक केर संख्या मात्र आँगुर पर गनल जा सकैत छल।

आब जँऽ कोनो उत्सव वा पावनि होइत छल तऽ दुनू गोटे उन्मुक्त भाव सँ खेलि क' ओहि मे भाग लैत छलाह। दुनू गोटे मीलि कऽ

सबहक संग राखैत छलाह। प्रत्येक समारोह क अवसर पर राज्य म एकटा विशाल आयोजन होइत छल,जाहि म सब प्रजाजन क सहभागिता रहैत छल। पैघ-छोट,ऊँच-नीच क कोनो भेदभाव नहि होइत छल। राजा क एहि विशाल हृदयता क सराहना सब कियो करैत छल। घमंड हुनका छूबइ सs डराइत छल। उदारता हुनक मुख्य गुण छल।

एक दिन पुरूरवा उर्वशी क कहलखिन - "प्रिय,हम अपन सौभाग्यक स्वयं प्रशंसा करैत रहैत छी। हमरा सन भाग्यवान क होयत! अहाँ सन अद्वितीय सौन्दर्यवती रमणी क संगति भेटनाइ परम सौभाग्यशाली होयबाक लक्षण अछि।"

उर्वशी बजलीह "अहाँ ई बात कोना एतेक विश्वासपूर्वक कहैत छी प्रियतम,जे हम दुनियाँक सबसँs सुन्दर स्त्री छी"?

हँसैत राजा पुरूरवा बजलाह - "हम ई बात ठीक जकाँ जनैत छी प्रियतम,जे अहाँ दुनियाँक सबसँ सुन्दर नारी छी। मुदा हमरा नहि बुझल अछि जे अहाँ सन सौन्दर्यक देवी स्वयं हमर कोन गुणक कारणेँ स्वर्ग सँs पलायन कय हमरा लग आबि गेल छथि। हमर प्रेम प्राप्त करs ला दौड़ैत-दौड़ैत पृथ्वी पर आबि गेलीह,आ स्वर्ग केँ बिसरि पृथ्वीक निवासी बनि गेलीह।"

मुस्कुराइत उर्वशी राजा सँs कहलथि - "अहाँ फेर सँs हमरा सs हँसी करs लगलहुँ प्रियतम। हम स्वयं अपना केँ कोनो साधारण महिला सँ नीचाँक स्तरक मानैत छी। कारण पृथ्वीक कोनो स्त्री स्वर्गक अप्सरा नहि बनs चाहती । ई अहाँ क विश्वास नहि होइत अछि हमर बात पर रखन पुष्ट कोनो स्त्री क जे धरती पर रहैत छथि,आ

देखब ओ कहिया स्वर्ग क अप्सरा बनय क इच्छा नहि करैछि । अप्सरा क पद सम्मान क पद नै छै प्रिय!आदर क पद छै किनका गृहिणी बनब। गृहिणी पद! जे हमरा अहाँक माध्यम भेटल! ताहि पर हम एकटा चक्रवर्ती सम्राटक गृहणी छी। हमरा सँ बेसी भाग्यशाली कोन महिला भ' सकैत अछि?"

"हमरा अहाँक पद सँ नहि अहाँ सँ,अहाँक सौंदर्य सँ प्रेम अछि उर्वशी। अहाँक सौन्दर्य हमरा बड्ड नीक लगैत अछि। अहाँ कँ उत्पत्ति स्वयं महर्षि नर-नारायण द्वारा कएल गेल अछि। ब्रह्मा सेहो अहाँ सन सौन्दर्यक सृजन नहि क' सकलाह।"- राजा उर्वशी कँ नेत्र मे प्रेमपूर्वक गहराइ सँ तकैत बजलाह।

गंभीरताक भाव अपन स्वर मे आनैत उर्वशी बजलीह - "हम एक बेर देवर्षी नारद सँ अपन उत्पत्ति क कथा सुनने छलहुँ । ओ अहाँ कँ सेहो हमर उत्पत्तिक कथा बुझल अछि तऽ कृपया हमरा कहू। हम देखब जे अपना दुनूक जानकारी एक समान अछि वा भिन्न। हमरा जेना बुझल अछि हमर उत्पत्तिक कथा ओहि मे कतेक सत्य अछि, अथवा किछु अंतर अछि से बुझना जायत।"

"अहाँक एहि संसार मे उत्पत्तिक कथा हम पौलस्त्य नामक ऋषि सँ सुनने रही। सच पूछू तऽ हम ओहि क्षण सँ अहाँ पर मोहित भऽ गेल छलहुँ, मुदा अहाँक अलभ्यता सँ अवगत छलहुँ,ताहि लेल हमरा द्वारा अहाँ क प्राप्त नहीं करबाक सोचि हमर हृदय मे पीड़ा उठल। अहाँक संसर्ग प्राप्त करबा हेतु हमर हृदय मे प्रेम क लहरि उठल,मुदा तखनहि हम ओकरा अपन हृदयक कोना गहींर गुहा मे नुका देने रही । ताहि लेल हम पौलस्त्य ऋषि कर

ओ कथन सदा बिसरि गेलहुँ जे ओ अहाँक कएक संबंध मे छल
छलाह |"
"कहू प्रिय हमर उर्वशि क विषय मे अहाँ की जनैत छी" उर्वशी
मासूम बालिका सन जिद्द करs लगलथि।
" ओ सब बात बिसरि जाऊ,आउ हमर हृदय सँ लागि कs एक
बन हमर धड़कन क आत्मसात कs लिय,जाहि सँ हमर अहाँक
हृदय क धड़कन एक साथ मिलकs वीणा क तान सन झंकृत भय
जाए। अन्यथा एहन नहि हुअय कि हमर हृदय क धड़कन बिनह
सँ व्याकुल भय रुकि जाए। "
राजा पुरूरवा एहि विषय सँ बचबाक लेल गप्पक दिशा बदलबाक
प्रयास कलथि ।
"देखू, हम कहने छलहुँ जे हमरा सँ एहि तरहें मनबा-जीनाक
गप्प नहि करू। दूर जाउ,हम अहाँक लग नहि आएब" - उर्वशी
नमसाओ क अभिनय करैत बजलीह ।
"अहाँ कोना नहि आयब" ओ कहैत राजा पुरूरवा हुनकर हाथ
पकड़ि अपना दिस खींचबाक प्रयास कलथि,मुदा उर्वशी हुनकर हाथ
झटकि मुँह दोसर दिस घुमा क' बजलीह -
"एना नहि,यदि अहाँ वचन दिय जे हमर उर्वशि क विषय मँ अहाँ
क जे किछु बूझल अछि से कहब। "
"भला अहाँक कोना इच्छा होय,आ हम ओकरा पूरा नहि करब!
की ओ संभव अछि? हम वचन दैत छी जे अहाँक सब इच्छा
पूरा करब,तखन अहाँक ओ इच्छा कोना नहि पूरा करब!"
ओ कहि राजा उछाल मारि क' उर्वशी क अपन अंक मे खींच

ललथि,रून डाकना यीन ययाधन यन ञ्यन ग्रम चिह्न ञंकिग कनय लगलाह। ग्रम-नर्षा क मध्य डा उर्वशी क उत्पत्ति कथा दूनका सूनावs लगलाह,

ञा उर्वशी नाजाक मूँख सँs वहनाञ्जीग शब्द क जाल मं डासनाञ्जग नहलीह।

क्रमशः

ञ्यन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.७.नन्द विलास नाय-हृहृनैन



नन्द विलास नाय

छछुनैन

नजनी वाजलि- हय सेठजी! वनकेँ मालिक अवै छथि। माथयन नूआँ ल लउह ना।
ऊँह! अहाँ छछुनैनक लाज - धाक कनव। आ ओकन देखकय माथयन नूआँ लव - कुनौलीवाली वाजलि।
अँय हउ सेठजी, उना कियेक वजै छहक। यहिल गँ वनकेँ मालिककेँ देखा मागन ओ महल्लाक मौगीसव घाघ गानिकय कगनाहि ह' जाइ छलि। आव ओहन कान वाग ह' गेलै हन ज गां वनकेँ मालिककेँ देखकय माथयन नूआँ नउ लउ छहक। जखन नजनी आ उाकन सेठजाइ कुनौली नाली अयना मकानक वनंडायन वैसल छलि गखन वनकेँ स0 अयना ठना सँ दाकान जाइ छल। नजनी देखलक ज वनकेँ मालिक अवै छैथ आ सेठजी उघान माथ वनंडायन वैसल अछि गँ सेठजाइ सँ माथयन नूआँ लमय लल कहलकै। वनकेँ स0 मूडी निवा कन अयना दाकान दिश चलि गेल। कुनौलीनाली लल धनसना। कुनौलीवाली वजलीह हय नजनी वूझी गां साल हनियन सासुन मधुवनी सँ नैहन मंभानपुन ओलह हन,गँओ गाना वनकेँ स0क कनगु नहिं वूमल छह। ओँ वनकेँ स0क छगहनयनी वूमवहक गँ थूक हंक दवहक। नजनी वजली - ओहन कान छगहनयन्ना वाला काज वनकेँ मालिक कलक हन ज गां ओना वजै छहक। कनक हमना गँ सूनावह।
कुनौलीवाली वाजलि- 0ीक छै चलु का0नी म ग वनकेँ स0क छगहनयनी कहैग छियह। ओ 0ाम वनंडायन कहनह आ ओँ का0ी

सुनि लग आ जा काय वरूध सO कँ कहि दग ज कुनौलीवाली अहाँ वासम अयना ननदि नजनीकँ कहै छलि गँ अनन उाकना (वरूध सOकँ) माँखि हगै आ उा हमना सँ कानि नाखग।
नजनी वाजलि_ ठीक छै काOनियम चलह। काOनिक सउक दिशक कवान वन्न क' लव गव ग किया नछ्छ न सुनि याउाग।
कुनौलीवाली वाजलि हुँ सउह कनव। दुनू ननैद रौजाछ्छी काOनीम जा काOनीक सउक दिशिक कवान वन्न क ललक।
कुनौली वाली कहय लागलि- वरूध सOक कनियाँ विनाट नगन वाली काक सुन्नि अछि स ग दखन छलक। नजनी वाजलि काक दिन दखन छी। वउ सुन्नि छै। आँखि कहन नमहन-नमहन आ कानी-कानी छै। आ ।Oान ग समगालाक हाउासन छैक।
कुनौली वाली वाजलि-आ गनदैन कहन हंससन लगग छै।
आ कश काक येघ छै। ताँनसँ निब्रा मूलै छै।
उहन कनियाँक नहैग उकटा चौका-नर्गन कनैवाली छौउीसँ नियाह कs ललक। जखन कि विनाटनगन वाली कनियाँ म दु टा वटा छै। उकटा वानह नखैक आ दासन दस नखैक। नजनी वाजलि अँय हs रौजी उगक सुन्नि कनियाँक अछैग वरूध मालिक चौका नर्गन कनै वाली छौउीसँ कियैक नियाह कलक। गद्गुम दु-दु टा वटाक नहैग। कुनौली वाली वाजलि नियाह की उाना कलक ,उन नियाह कलक। उन नियाह कलक आखिन चौक-नर्गन कनै वाली छौउीक नरूध मालिककँ कथीक उन हलै ज नियाह कनउ यउलै ,नजनी कुनौली वालिसँ पुछलि।
कुनौली वाली वाजलि -उाछ्छ चौंका नर्गन कनै वाली छौउीक नाउां

जीवछी छी। एक दिन जीवछी वकील सेठक मकानक आगाँ हाथमे एकटा शीशी लऽ कऽ जोर-जोर सँ बजैत कहए-सुनु यौ ऐ मुहल्लाक लोक सभ। सुनूँ यौ सम्मानित बाजारक लोकसभ। वकील मालिकक बच्चा हमरा पेटमे अछि। तँए वकील मालिक हमरासँ बियाह कऽ लौ नहि त ई शीशीमे जहर अछि। हम जहर पीब कऽ अपन प्राण दऽ देब। अहीं सब पंचैती करू हमरा दामनपर दाग लागि गेल। हम कलंकनी भऽ गेलौं। आब हमरासँ बियाह के करत। लोक कहत कुलटा छी।

बजैत-बजैत जीवछी हबोढकार भऽ कऽ कानए लागलि। ओकर बात सुनि आ कानब देखि कऽ मुहल्लाक लोकसभ ओकरा लग जमा भऽ गेल। पुरुषसँ बेसी जनिजातिक भीड़ लागि गेल। कियाकँ तँ चिन्हैत छलैक।

हँ! हँ!! कियाकँ कियैक नहि चिन्हब। पैछला बेर ई बात कमिश्नरमे ओझा भेल रहए मुदा मात्र पचास टा रोट भेल रहए, नजरी बाजलि। कुनौली नाली बाजलि- हँ!हँ!! बेहद कया। ई जीवछी लग जाकर ओकरासँ (जीवछीसँ) पुछलक अयँ गे जीवछी तौं जे कहै छीही जे तोरा पेटमे वकील मालिकक देल छौ तकर की सबूत छौ। तैयन जीवछी बाजलि गे कया काकी जँ हमरा बातपर विश्वास नहि हाउ छौ त जा कऽ वकील मालिकसँ पुछही ग। पुना मुहल्लाक के कहए जे पुना ऊ बात जंगलक आगि जकाँ पसरि गेल। वकील सेठ अपना सोना-चानीक दोकानपर रहए। किया कहए गेलै ई दौड़ल आएल। ई जीवछीकेँ सममावेल कागिश करलक मुदा जीवछी एक्कटा बात बाजल अहीं कहू मालिक जे आब हमरासँ कलंकनी

सँ क नियारह करत। किया ने करत। अहाँक पाय लऽ कऽ हम कमाय जाउ। ओँ अहाँ हमरासँ नियारह नहि करब त हम ई माहुर पी कऽ अपन प्राण दऽ देब। बरुण सेठक नीक व्यवसाय अछि। दस-पन्द्रह हजार प्रति दिनक कमाइ छै। बरुण सेठ कथा कऽ अलगम जा कऽ कहलक कथा सोजी अहाँ जीवछी कँ सम्मानियो आ ओं महिला डाॅक्टर लग लऽ जा कऽ गर्भपात करानए लेल राजि भऽ जाएत तँ एक लाख टाका देबै। आ पच्चीस हजार टका अहुँ क दऽ देब। आ आगिला वार्ड कमिश्नरमे आहाँक जीताबए लेल पूरा जोड़ लगा देब। अहाँक चुनावमे जे खर्च हएत, हम वहन करब। कोना बचाबी हमरा ऐ मुसीबतसँ निकालू। कथा सोचलक - ओँ जीवछी बात मानि जाएत तँ २५ हजार टाका टटका फायदा हएत आ नवम्बर मासमे नगर पंचायतक चुनाव हएत। अगस्त मास बितिए रहल अछि। बरुण मालिक पूरा जोर लगाकए वार्ड कमिश्नर मेँ जीताइए देत। अपना घर सँ ढौआ ने खर्च हेत। चुनाव हायमे जे ढौआ खर्च हएत सेहो बरुण मालिक गछलक हन। ओँ वार्ड कमिश्नरमे जीत जाएब तँ नगर पंचायतक मुख्य पार्षद लेल परियास करब। नहियों मुख्य पार्षद हएब मुदा मुख्य पार्षद लेल जे वोट देत तँ कम्मीमे दु - अढ़ाइ लाख टकाक आमदनी तँ हेब करत। मुदा ई जीवछी बात मानए तखन ने।

कथा जीवछी कँ अलगम ल' जाकए बरुण बात समझौलक, मुदा जीवछी एक्कोटा बात बजैत रहल - एक लाख बदला दसो लाख देत तैयो हम बच्चा नहिं खसाएब। ओं बरुण मालिक हमरा सँ नियारह नइ करत तँ हम माहुर पीब कऽ जान दऽ देब।

छौ। बात सब छोड़ित रहए तखन बच्चा सभक पही बिराटनगर वाली पहुँचली। एकरा देखत जीवछी आर बड़का नाटक शुरू कलक। जीवछी बिराटनगर वालीक पएर पर गिर पड़ल आ कनैत बाजलि-मलिकाइन ये मलिकाइन हमरा बिसारू अहिं करू ये मलिकाइन। अहिं कहू जे आब हमरा सन कुलटासँ के बियाह करत ये मलिकाइन। जँ मालिक हमरासँ बियाह नै करत त हम जहर पीब कऽ अपन जान दऽ देब। बिराटनगर वाली बजली जीवछी हम असगरि मे अहाँ सँ गप्प करए चाहै छी। चलू हमरा एना चलू। कानब एन ना बिन्दा हिकिन नहि करू।

बिराटनगर वाली जीवछीकेँ अपन आँगन लऽ गेली। ओ जीवछी सँ पूछली आब कहू जे अहाँक पेटमे सभ जीक (बच्चा सभक) बच्चा करा अछि। जीवछी कहलकैन मलिकाइन अहाँ अपन आँखिक इलाज करावए नैहर बिराटनगर गेल छलौं। अहाँक गेला एक हप्ता रहल रहए। एक दिन हम बर्तन-बासन माँजि कऽ घर बिदा रहल रही त मालिक कहलक-जीवछी एक कप चाह बना दे। हम चाह बनबए लगलौं त मालिक बजला ता अपना लऽ एक कप बना लिहे।

हम तँ कहियो मालिक सामने चाह पीब नै रही तँए कहलियै नै मालिक हम चाह नहि पीब। अहाँ लेल बना दऽ छी। हम एक कप चाह बनाकऽ मालिककेँ दऽ एलियैन। चाह दऽ कऽ हम बिदा होऽ गेलौं त मालिक कहलैन-रुक चाह पीबऽ दे तखन जइहे। तोरासँ किछु गप्प करबाक अछि। मालिक चाह पीबैत बजला बड़ नीक चाह बनलौँ हन। ऐ चाहपर तोरा किछु इनाम देऽ कऽ

मान हाऽऽेत। हम साची हम ग सव दिन मालिककँ ठहन चाह वनाकs दs छलिया आन दिन कहाँ कहिया मालिक वतोऽ्ी कन छलखिन आ वनाऽ्क संग ऽ्नामा -नक्षीगक गय्र कनै छथिना आखिन की वाग छियेक। गानगम मालिकक चाह सO (गल छलै। स ऊ (मालिक) जवीम सँ ठक हजान टाका दऽ्ग वजला- ल ऽ्ी गाहन ऽ्नाम हलै। हम साची ठक कय चाहक ऽ्नाम ठक हजान टका । मूदा हमना लाद जागल। हम मालिकक हाथ सँ टका ल'क' निदा द' (गलौं। मालिक हमना हन वजौलनि आ कहलैन- जीवछी नै जानि हमना मान कना नै कना कनै या। माथा सहा दूखाऽ्ीग अछि। अनक हमन माथ दावि द,गखन चल जैहना हम की कनिगौं। मालिक डाछानि यन यनि नहलाह आ हम माथ दवावै लगलौं। ठकाठक मालिक हनि यांजम ल'क' हमना चूमा लीअ् लगलाह। हम कहलियैन -मन! मालिक ऽ्ी की कनै छीयै। किया दखग गँ की कहग। गै यन मालीक वजला- किया नँय दखग। (गट हीगन सँ वह्र अछि। (गट आ खितकी सवम यदा लागल अछि। हम कहलियैन नै मालीक नै। हमना छानि दियौ। मूदा मालिक नहिँ छातलनि ऊ हमन ऽ्ीजाग लूटि ललनि। हम कानय लगलौं गँ मालिक हमना ठकटा याँच हजानक नाटक गडी दलनि आ कहलैन ककना लग नै वजियहनि। गाना हम मालामाल कs दवौ। हमहुँ लाहम हँसि (गलौं। अयन कयत Oीक क' छ: हजान टका ल' घन आवि (गलहुँ। गै क नाद जव घन अहाँ ठलौहु, वन- वन मालिक हमना देह सँ खलथि। आऽ्ी हम मालिकक वच्चाक माय वनय वाली छी। मलिकाऽ्ीन अहीं कहु जेम हमन कान दाष? गै यन

बिनाटनगन वाली वजली दाख गँ अद्कूँ क अछि। गखन वसी दाख स0 जीक छैन। अम्बा अन्हाँ वेसु न्हम स0 जीक वजवै छीयैन। बिनाटनगनवाली मलिका्ञ्ञीन स्हौन कs वन्कुध्न स0क वजोलक। बिनाटनगन वाली गखन स0 जी सँ पूछलकैन- जीवछी ज कन्हैज स वाग सग छी की न्हसी। वन्कुध्न स0जी वाजल न्हँ जीवछी न्हसी वजै छी। गै यन जीवछी वाजल जँ ञ्ञी गय्य मु0 छीयै गखन न्हन अन्हाँ कया काकि कँ किया न्हमना लग य(0न नन्हियैक। कया दिया टाका माद की सव कन्हन नन्हिजी। बिनाटनगनवाली वाजल कया अन्हाँ कँ की सव कन्हन छली। जीवछी वाजल कया काकी वाजल छलै ज न्हल स न' (गेल। काना मन्हिला ताकुन सँ अयन यटक वद्या गीना ल। गाना वन्कुध्न मालीक सँ ज्क लाख टका दिया दै छियौ। गैयन न्हम पूछलियै ज्क लाखक वदला दसां लाख टाका मालीक दगै गँ न्हमन ञ्ञीञाग नायस न' जाजग!नै न? जौं मालिक न्हमना सँ वियान्ह नै कनगै गँ ञ्ञयन्ह जन्हन यीकय अयन जान द' दवौ। गै यन बिनाटनगन वाली वजलै (गै छुछनैनिया स0 जी दाबी गँ अछिज गाद्कूं कम नै छँ! लान्हम न्हँसल नन्हलँ आ जखन यैन नानि न' (गेलौ गँ आव कन्है छी ज मालीक बियान्ह नै कनग ग जन्हन यी लैव। जौ ज्गय सँ,ज मान न्हाञ्ञी छी स कन (गै। जीवछी वन्कुध्न स0क घन सँ निकेल स7क यन आवि (गेल आ वाजय लागल वन्कुध्न मालीकक न्हमना सँ बियान्ह कनै य7गै, नै गँ न्हम जान द' दवौ। उाक्कन बिनाटनगन वाली वजय ज जँ स0 जे कुलछनी सँ बियान्ह कनग गँ न्हम न्हाँसी लगाकय मनि जायव। आव गँ वन्कुध्न स0 व7का न्हाँसम य7 (गेल । उा सावय जँ जीवछी सँ वियान्ह

कनय छीयै गँ यग्नी फाँसी लगाकय आमहत्या कय लाग्ली आ ऊँ जीवछी सँ वियाह नै कना छी गँ ऊा जह्न यीकय प्राण द' दगा। हमना यन कण माकदमा चलौका। क कहलक जीनगी हनि जलक चकी यिसय यठगा। वकण सठक यैन एक काग नदी आ दासन काग खाधि , आखीन जाएग गँ जाएग कगय! जीवछीक नाटक आगा गज ह' गेलैका। यचासा आदमी जमा ह' गेल छलैका। वकण सठक ज हीग अयजीग नहय ऊा वकण सठ सँ कहय लागल सठजी एकटा उयाय अछि जीवछी सँ वियाह। गँ जीवछी सँ वियाह क' लिअ् आ ऐ गमाशाक अन्त कन्। जाक काल खैन वियाह नै कनव गाक गमाशा वढग आ अहाँक वदनामी हएग। अहाँ घीनाएव। वकण सठक एकटा दाण अछि,नाऊा छीयै ऊाम प्रकाश वनौनागंज घन छै। ऊामप्रकाशक कनियाँ सँ विनाटनगन वालीक' वढ प्रम छै। वकण सठ हान क' ऊामप्रकाश आ हुनकन कनिया कँ अंगना म वजौलका। सुनै छीयै अंजना संमानपून कांलजम प्राहसन अछि। अंजना आविकय विनाटनगन वाली क' वक्ता वाग समझौलका। विनाटनगनवाली एकटा शर्ग यन वाग मानलक ज ऊँ सठ जीवछि सँ वीयाह कनाह गँ (हाना क') दासन घन म नाखय यठगैका। हम ऐ घनम ऐ कुलऊधी कँ नँय नहय दवै। वकण सठ क हैगिक कान कमी छैका। ऊा वाजल हम जीवछी कँ दासन घन म नाखव। हाला वावाक मंदीनम यछह वीण गोटयक समऊ वकण सठ जीवछी संग वीयाह कलका। थाऊक दिन गँ एकटा किनायाक मकान म जीवछीक नखलका। यछागि थाना सँ यूव जमीन किनक दु काठीक मकान वनाकय जीवछीक दलकैका। जहिया ऐ महल्ला क'

जनिजाति वन्कध सOक कन्गुा वूमलक मव्हिला सव उाकना नाउा यन थूक व्हूखल। मव्हल्लाक किया मोगी वन्कध सO सँ लाजधाक नें कनय। नजनी वाजल काज छ्ह्छनेंन वाला कलनि गँ किया ब्ह्रीज्ञा काना कन्गोन।

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउा।**

२.६.कूमान मनाज कथ्य- लघूकथा- साद्‌ृथ्गा



कूमान मनाज कथ्य

लघूकथा- साद्‌ृथ्गा

" याया! कोलज क व्हीस जमा कनें क काल्हि आखिनी दिन छ्ठ....व्हम विसनिय गेल नव्ही!"

" कगे लागग?"

" यंद्रव्ह सय गीस न्कयेया। "

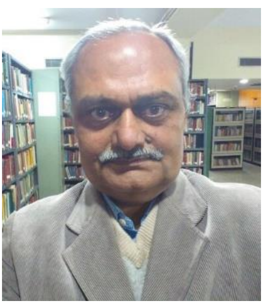
व्हमन व्हाथ अनायास योकट सs यर्स निकालि न्कयेया गिनि कs उाकना व्हवा म लागि गेल। ज्ञगा गs व्हन कद्धना सिया कs काज जाग व्हव्हीय जों .... ज्खन कोलजक व्हीस व्हनव अयानथ्यक छ्ठ।

यैह साचै-साचै आँखिक आगाँ साजाग रहs उलाह वावूजी आ मान यति उल ज हमना सर राछी-वहिन क आक जा७ दला क वाद्य उा वाहन जाछी-अवै लै दासन खण्ड (धानी कियैक नहिं कहिया नाखि सकलाह।

-कुमान मनाज कश्यप, सम्प्रति: रानग सनकानक उप-सचिव, संपर्क: सी-11, टावन-4, टाछय-5, किदवछी नगन पूर्व (दिल्ली हाट क सामन), नछी दिल्ली-110023, # 9810811850, छीमल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

२.१.नवीन्द्र नानायण मिश्र-(0हा यनक मौलाअल गाछ (उपन्यास)- धानावाहिक



नवीन्द्र नानायण मिश्र

(0हा यनक मौलाअल गाछ (उपन्यास)- धानावाहिक

खण्ड १ सँ ७

ठेहा पनक मोलाएल गाछ

1

चौलीस साल पूर्व दरभंगा जिलाक छोटसन गाम लक्ष्मीपुरसँ नौकरी करबाक हेतु हम दिल्ली आएल रही। दिल्लीमे कोनो परिचित नहि छल। दरभंगासँ बरौनी आबि कए दिल्लीक हेतु जयन्ती जनता एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ने रही। दिल्ली अएलाक बाद किछु अकबक नहि फुराए। कतए जाइ,ककरा संपर्क करितैक। कतहु ठेकान नहि रहए। खाली सुनने रहितैक जे दिल्लीमे सभक ठेकान भए जाइत अछि। बस जएबाक देरी अछि। ओतए पहुँचलहुँ आ रास्ता खुजि जाएत। आब तँ ओ बातसभ सोचि कए हँसी लागि जाइत अछि।
दिल्ली अएलाक बाद हम कैकदिन बौआइत रहि गेल रही। तीन दिन धरि बिरला धर्मशालामे रहल रही। ओहिठामसँ निकलि गुरुद्वारा रकाबगंज पहुँचल रही। बड्ड जोर भूख लागल छल। संयोगसँ ओतए लंगर चलैत रहैक। भरिपेट हलुआ,पूरी खेलहुँ। हलुआ की रहए लगैक जेना सुद्धा घी छह-छह कए रहल अछि। जतेक खाउ। कैकदिनपर एहन नीक भरि पेट भोजन भेटल रहए। ओकर बाद खालिस दूधमे बनल चाह ,ओहो बड़का गिलासमे। पीबि कए मोन आनन्द भए गेल। भरि दुपहरिआ ओहिठाम गुरुवाणी सुनैत रहलहुँ। ओकर आनन्दमे रही से नहि कहि सकैत छी।

राजन कलाक बाद गुरुस्थानाक स्थानिक बाहन विश्राम करैत नहि कि धोती,कुर्ता पहिरने ,टोप करने अधवयसू पंडितजी एलाह । ओ बन-बन हमरा दिस ताकथि,किछु बाजथि नहि । मुदा बड़ीकाल धरि लगपासम घूमैत रहलाह । हुन हमही हुनका पूछलिअनि-

-अहाँक घर कतए भेल?

-मधुबनी जिलाम ।

-हमहुँ ओमहरक छी।

-स तँ बगएसँ बूझा रहल अछि । तँ हम ओत कालसँ एहीठाम घूमिआ रहल छी ।

-हमरा लागए ज अहाँ अपन लोक छी ।

-एहिठाम की कए रहल छी?

-किछु नहि? गामसँ अएला तीनदिन भए गेल । तहिआसँ बौआ रहल छी । की करी किछु बूझा नहि रहल अछि।

-अहाँ हमरा संग चलू।

हम बिना किछु सोचने हुनका संग विदा भए गेलहुँ । ओ संस्कृत संस्थान,दिल्लीम आचार्य छलाह। हुनका संस्थानक पनिसरम डेरा भेटल रहनि। हम दुनुगोटे ओतए पहुँचलहुँ । डेरापर पहुँचि हमरा तुरंत एक गिलास आमक सरबत पिऔलथि । हुन अपनसँ बना कए चाह पिऔलथि । हमसभ हुनकन डेराक ओसारापर राखल खाटपर बैसि गेलहुँ । ओ बड़ीकाल धरि गप्प-सप्प करैत नहि गेलाह । ओहीक्रमम पूछैत छथि-

-अहाँ दिल्ली की करए अएलहुँ?

-कोनो नौकरी एहि आशाम तँ निकलल छलहुँ ।

-कतेक पढ़ल छी?

-उच्चमध्यमा कने छी?

-अहाँ किएक ने आगूक पढ़ाइ एहिठामसँ कए लैत छी? एतए रहबाक जोगार भए जाएत। छात्रावासमे निःशुल्क सभटा ओरिआन भए जाएत।

-हमरा तँ काज चाही। गाममे हालति बड्ड खराब अछि।

ओ हमर बात सुनि कए गुम पड़ि गेलाह। फेर कहैत छथि-

-अच्छा आइ आराम करू। देखैत छिऐक की कएल जा सकैत अछि।

हम राति भरि ओतहि रहि गेलहुँ। भोर हुनक संग संस्थानमे सौंसे घुमलहुँ। बड्ड नीक लागल। कतेको विद्यार्थीसभकेँ आपसमे गद्य-पद्य करैत देखलिऐक। ओकरासभकेँ पढ़ैत-लिखैत देखि हमरा उत्सुकता भेल।

-किएक ने आगू पढ़ाइ करी? मुदा हमर जोगार होएत कोना?

हम अपन मनक बात हुनका कहलिअनि। ओ कहैत छथि-

-अहाँ एहिसभक चिन्ता नहि करू। हम आइ प्राचार्यसँ गप करबनि। हमरा लगैत अछि जे ओ सभटा जोगार कए देताह।

हुनकर बात सही भेल। हमरा नामांकन ओहिठाम भए गेल। रहबाक,खबा-पीबाक ओरिआन सेहो भए गेल। हम सालक-साल ओहिठाम पढ़ैत रहलहुँ। हमर परीक्षा परिणाम नीक सँ नीक होइत गेल। कालक्रमे हम कतेक विषयमे पारंगत भए गेलहुँ। पढ़ाइ समाप्त होइतहि हमरा दिल्ली सरकारक स्कूलमे शिक्षकक नोकरी भेटि गेल। एहि तरहेँ किछुए सालमे हमर जीवन परिवर्तन

आवि (गल । सनकानी नौकनी र्ल ,सनकानी उना सव्हा र्टि (गल। कुलमिला क७ व्हम दिल्लीम आनामसँ नव्ह७ लगलहुँ ।

2

यँतिाजीकँ ७कमात्र संतान कुनकन युत्री नमा छलखिन। उा ननस्ठली निद्यायीOम यडैा छलखिन । छुट्टीम अयन यिाक उनायन अवैा नहैा छलखिन। समय-समय व्हमना कुनकासँ र्ंट व्हाऽऽा नव्हल। उव्हन स्नरगव नीक गव्हन दखवाम यनित्र छलीव्ह उा। भिउा प्राप्क कलाक वाद उा दिल्ली७म सनकानी नौकनी कनैा छलीव्ह। व्हम ऽऽी वाग वकुा वादम वुमलिउैक ज कुनकन युना यनिनानकँ व्हम यसिंद नव्हिअनि। उा सन्ह वाव्हथि ज व्हमन विआव्ह नमासँ र्७ जा७। मुद्रा गाव्हि व्हगु ककनासँ गय क७ल जा७,कना की क७ल जा७ स नव्हि वुमानि। साम व्हमनासँ किछ्ह कव्हथि नव्हि। आखिन ७कदिन यँतिाजी दुनु वकगी व्हमन उनायन यहुँचि (गलाव्ह। व्हम (थाउव काल यव्हिन ऽऽसकुलसँ लौटल नव्ही। उा सन्ह अयन मानक वाग कव्हलनि। व्हम कव्हलिअनि-

-सव्ही वाग ऽऽ७व्ह थिक ज व्हमना नमा वकुा यसिंद छथि। मुद्रा व्हमन माता-यिताक सव्हमगि लव गँ जरूनी अछि। गाव्हि व्हगु अयन लाकनि प्रयास कन्ह। व्हमना दिससँ काना दिक्कगि नव्हि व्हा७गा। गकनवाद उा सन्ह व्हमन गाम चलि (गलाव्ह। व्हमन माता-यिताक सव्हमगिसँ व्हमन विआव्ह नमासँ र्७ (गल। ७व्हि गनव्हँ दिल्ली७म व्हमन गृव्हस्ठी नीकसँ वसि (गल।

विआहक बहुत दिनक बाद धरि हमरा लोकनिकेँ धिआ-पुता नहि भेल। शुरूमे तँ किछुदिन हमसभ गप्प-सप्पक ध्यान कए अपनहि एकरा टारैत रहलहुँ। बादमे जखन चिन्ता भेल जे बच्चा होएत तँ कोनासोन धरि किछु नहि भेल। कतेक कबुला-पाती भेल, पूजा-पाठ भेल। आखिर हमरा पहिल संतान पुत्रीक जन्म भेलनि। हमरा सभक प्रसन्नताक अंत नहि छल। हमरा अखनहु मोन पड़ि रहल अछि जे छठिहारमे हमर सासु-ससुर कतेक उत्साहित रहथि। कतेकोगोटेकेँ नोत देल गेल रहए। हिजड़ासभ आबि कए की नाच कने रहए। जा धरि ओ सभ मुँहमांगा इनाम नहि लेलक ता धरि अड़ल रहल। एहि तरहेँ पुत्रीक जन्मसँ हमर संपूर्ण परिवारमे आनंदक वातावरण पसरि गेल छल। साल भरिक बाद हमरा दोसर संतान पुत्रक जन्म भेल रहनि। तखनहु ओहिना उत्सव मनाओल गेल रहए। पुत्रक जन्मक पाँच सालक बाद जा कए शालिनीक जन्म भेल रहनि। हम तँ दु संतानक बाद परिवार नियोजनक समर्थनमे रही। मुदा हमर इच्छा रहनि जे एकटा बेटी तँ हेबाक चाही। बेटी बिना घर सून रहैत अछि। आखिर सब इच्छा पूर्ण भेल। हमसभ बहुत प्रसन्न रही। नित्य उठि-सुति ईश्वरकेँ धन्यवाद दिअनि।

पीनुबच्चाक पालन-पोषणमे हमरासभक समय बहुत व्यस्ततामे बितैत रहल। दुनुगोटेक नोकरी सेहो करबाक रहए। बीच-बीचमे कोनो नौकरी छोड़बाक विचारमे रहथि। मुदा जेना तेना समय कटैत रहल। बच्चासभक नीक शिक्षा हेतु तँ पर्याप्त टाका चाही। आब ओ पढ़ाइ तँ छलैक न जे लोक मगनीएमे आइए, बीए, कए

लिअ७। आव गँ ॢ्सकुल यढाॢ् कालजासँ महग रु७ (गल छैक । यह्निक ॢ्सकुल चाहव कनी। सरु सुनिधाक अछैग कउा अयन ननार्कँ सनकानी ॢ्सकुलम यढव७ नहि चाहैग अछि। स७हसरु साचि क७ नमा नौकनी कनैग नहि (गलीह।

कालक्रम गीनुवव्रा उव्र भिउा प्राप्त कलनि। मूनली आ ध्याम प्रगिष्ठिग कालज सँ ॢ्ँजिनीयन वनि नौकनी हगु अमनिका चलि (गलाह। हम दूनकासरुकँ वह्नग वूमलिअनि ज अयना दशम आव नौकनीक काना कमी नहि अछि। जकन जहन याथ्रगा छैक गकना गहन काज रुटि जाॢ्ग छैक। मूदा स क वूसैग अछि? उा सरु दनमाहाक यैकज आ सुनिधा गनैग नहलाह। दश छाडि दलाह आ (गलाह स (गल नहि (गलाह। अयन राषा,संस्कृगि समाज सरुकिछु दाउायन लगा दलाह। हमसरु की कनिगहुँ? दूनु वकनी हवाॢ् अड्डा धनि दूनकासरुकँ अनिआगि दलिअनि। नमा नहि-नहि क७ कान७ लागथि। हम वह्नग वूमविअनि। मूदा संगानक हगु मागाक माहक की कहल जा७? अयन रुनि उा वह्नग सह्नानथि। गथायि आँखिसँ नान टयकिग नहनि। नहि (गलहुँ हम दूनु(गाट आ शालिनी। उाहा चाटैउ ७काउन्ट रु७ (गलीह। दूनका निदश जवाक ॢ्छा नहनि। मूदा मा७ अडि (गलखीन।

-कम सँ कम गुँ गँ नहि जाह? हमनासरुकँ क दखग?

शालिनी हमनासरुक वाग मानि (गलीह। दूनका मूम्वॢ्ीम नौकनी लागि (गलनि। उागहि अयन यसिंदसँ विआहा कलनि। ७हि गनहुँ हमन यनिवान ७क हिसाव यूर्ण सुयुग्त रु७ (गल। काना चीजक काना कमी नहि। जकन दखु गकन टाका वनसि नहल

छलनि। सभकेँ अपन-अपन आलीशान मकान छलनि । नौकर-चाकर छलनि । नहि गेलहुँ हम दूनू बेकती । दिल्लीक तीन बेडरूमक फ्लैटक एक कोनमे सटि रहल छलहुँ।

3

हमरा मोन पड़ैत अछि जे मुन्नीक जन्मक समय रमा कोना मरित-मरित बचि गेल रहथि । एक हिसाबे ओ मरिए गेल रहथि । डाक्टर,सिस्टरसभ निराश भए गेल छल । ओकरासभक कहब रहैक जे बच्चा आ जच्चामे सँ कओ एकहिटा बाँचि सकत । हम शल्यचिकित्सा कओसँ बाहर हाकरास करैत रही । हमरा लगमे टाका स बहुत कम छल । एकाएक डाक्टर कहलकैक जे तुरंत शल्यक्रिया करए पड़तनि । ताहि लेल आवश्यक ओरिआन करबाक छलैक । सिस्टर दवाइक सूची पकड़ा देलक । संगहि शल्यक्रियाक एक हजार शुल्क स जमा करबाक हेतु कहलक । आब की करी? एतेक टाका कतएसँ जोगार कएल जाइत? ओहि समयमे ओ डाक्टर भगवान बनि कए ठाढ़ भए गेल छल । अपन जेबीसँ सभटा खर्चा कए देलक । सभटा काज बाकि कए रमाक शल्यक्रिया कएलक । हम बच्चाक कानब सुनि कए कूदि गेल रही । शल्यचिकित्सा कओसँ दौड़लि सिस्टर आएल रहए-

-अहाँकेँ बेटा भेलए ।

-रमाक की हाल छनि?

-ओ एकदम ठीक छथि।

-आ बच्चा?

-उहो ठीक अछि।

ई हम सुनि भेल छलहुँ तहियन विश्वास नहि भ' रहल छल। अम्मा-बच्चा दुनुगोटे सकुशल छल। वाह रे डाक्टर! कमाल क' देलक। हम बहुत प्रसन्न भेलौं। धन-धन डाक्टरकेँ धन्यवाद देलहुँ। घरसरकेँ फोन क' सबटा सूचना देलहुँ। थोड़ेक कालमे हमर दुनिआ बदलि गेल छल। हम एकटा पुत्रक पिता बनि गेल छलहुँ। हमर पत्नी सेहो माँ बनि गेल छलीह। हमरा लग एहिसँ नीक समाधान की भ' सकैत छल।

सात दिनक बाद हमर दोसर पुत्र श्यामक जन्म भेलनि। ओकर जन्म प्रक्रिया सेहो बड्ड कष्टकारी छल। दु मास पहिनसँ ममाकेँ अस्पतालमे रखबाक पड़ल रहनि। डाक्टरसभक कहब जे ममाक पानिक कमी अछि जाहिसँ गर्भस्थ शिशुकेँ बचब बहुत मुश्किल अछि। देहमे आक्सीजन कम भ' जाइत छलनि। नाकमे चीनी बढ़ि गेल छलनि। रक्तचाप बढ़ल रहैत छलनि। कखनहु गर्भपात भ' सकैत छलनि। ताहिसँ बचबाक हेतु ममाकेँ पूर्णविश्राममे राखल गेलनि। आब की कएल जाए? किछु बुझबा नहि आबए? कोन बाट डाक्टर एमसाइत रहए-एमक जल्दी दोसर संतानक कोन जरूरी छलैक। एहि स्थितिसँ बचबाक छल। मुदा आब कएल की जा सकैत छल? जे आगू भ' सकैत छल से कएल जाइत। दुमास धरि दिन-राति अस्पतालक चक्कर लागल रहल। कहिओ किछु,कहिओ किछु। खर्चाक गप्प करब नहि होअए। जानक आगू टाकाक कोन महत्व छैक? सएह साचि संतोष करी। जान बाँचि

जानि गँ टाका गँ हर कमा लब ।आखिर बच्चाक जन्मक समय आएल। एनसँ डाक्टरसभ शल्यचिकित्सा करब लागि गेल छल। हम बाहर ठाढ़ रही । मोन धुक-धुक करैत रहए । आखिर बच्चाक कानबाक स्वर सुनाएल। रमा सेहो बाँचि गेल रहथि । ओहिसँ नीक की भऽ सकैत छल । दू मास अस्पतालक खर्चाक जोगाड़ करबामे हमरा सरगति भऽ गेल रहए । उपरसँ शल्यक्रियाक खर्च सेहो देबाक रहैक । ओहि बेर ओ डाक्टर नहि छल। मुदा हमहुँ साकि रही। किछु टाकाक जेना-तेना जोगाड़ कर रही । किछु कर्जा करए पड़ल छल। जेना-तेना काज निपटि गेल ।

4

पहिल संतानक जन्मक बाद ओ रमा मातृत्व अवकाश लेलीह आ दोसर संतानक जन्मक साल धरि बाद धरि चलैत रहल । ओकर दीर्घ छुट्टी दरमाहा संग संभव नहि छल । परिणामतः सालभरिसँ बेसी ओ बिना दरमाहाक अवकाशपर रहलीह । एकर बाद दुविधामे रहथि जे की कएल जाए? कारण दुनू बच्चा बहुत छोट छल । दिनकम दिन धरि लटकल रहैत छल । ओकरासँ घरमे छोड़ि कए काजपर जाएब संभव नहि बुझाइत छलनि? नौकरी छोड़ब सेहो ठीक नहि लागनि। एखन की करथि? बीचक रस्ता निकालल गेल । थोड़ दिन हम छुट्टी कए ली ओ किछुदिन रमा छुट्टी लए लेथि । संयोग एहन रहैक जे रमाक दुसालक अध्ययन

अनकाश एट गेलनि।
ओहि गनहँ कहुना कओ वच्चासरक पालन-पाषध हाेछा नहल। एानसँ उासर हमना दुनुगोटकँ व्यस्क कओ देग छल। छाट-छाट वाणयन दुनुगोट लउेग नहेग छल। ओक खलोना दुनुकँ वाही। दुनुगोट हमन कानाम नहग। हम काजयन जहाँ विदा हाेछादुँ कि दुनु एाकानि यानि कओ कानओ लागेग। जना-गनाक डाकनासरकँ मनाउाल जाेछा। कखनहु दुनु वच्चाम वहुग मल नहेग गँ कखनहु गहन न मगउा यसनि जाेछा ज सद्भानव मासकिल एओ जाेछा। आन ज हाेछ मुदा हमना लाकनिक समय वहुग नीकसँ कटि जाओ। वहुग मान लागओ। ओक हिसाव हमसर स्नर्गक सुख यावि नहल छलहुँ। वच्चासरम एनिश्चक स्नप्न दखेग नहेग छलहुँ।
दुटा युत्र नन्न यावि कओ हम धन्य नही। ेछीश्वनकँ निग्य गोहनावी,हुनका हृदयसँ कृगज्ञगा व्यक्त कनी। दुनु वच्चा आ नमाक स्नास्थ्य ठीक नहनि,उा सर सुखी नहथि सओह हमन जीननक लक्ष्य छल। गाहि हगु दिन-नागि यनिश्रम कनी। ेछसकूलक समयक वाद ट्युशन सहा कनी। गाहि चक्कनम काओ-काओ न चलि जाेछ। दिल्लीक चांदनी चौकसँ गुउगाँन धनि धायि दी। एान घनसँ विदा हाेछ आ नागिम कहिउा दस वज,कहिउा ओगानह वज नायस आवी - थाकल ठहिआओल। मुदा ओक वन वच्चासरक मुँह दखि ली ,नमाकँ हँसैग दखि लिअनि गँ सर थाकनि दुन एओ जाओ। कहवी ठैक ज उम्मीदयन दुनिआ चलैग ठैक। यदि स नहि नहैक गँ कउा जीव नहि कनग। दुनु वच्चा आ नमाकँ दखि हमना अगिशय उत्साह हाेछा छल आ हम एान उा-स्ा ओक वन हून संघर्षक

हमहु कृतसंकल्प रहए जाइत छलहुँ ।
दुटा संतानक बाद हम सोचन लगलौं जे आब बस करी । परिवार नियोजनक आपरेशन करबी । मुदा जखन कखनहु बात होइ हमरा टारैत रहथि । हमरा बुझब नहि कहए जे बात की अछि? किएक ने ओ हमर समर्थन करैत छथि । एकदिन हम स्पष्ट पूछलिअनि-
-हमरासभकेँ आब दुटा सानसन संतान भऽ गेल । ईश्वरक बड़ी महान कृपा भेल । आब एकरासभक नीकसँ लालन-पालन होएबाक चाही । आगू आब परिवार नहि बढ़ए तखनहि ई संभव होएत । परिवारक आकार यदि सीमित नहि रहत तखन ओकरासभक नीक व्यवस्था कोना होएत?
-ई तँ ठीक। मुदा...
-मुदा की? साफे कहैत छी जे एकटा बेटी नहि भेल।
-बेटी जन्म लेत तँ ओकर बिआह-दान करएसँ करबैक?
-सेहो भऽ जेतैक। बेटी लक्ष्मी होइत छैक । अपन आगाँ कहैत रहैत छैक।
करबा बुझबाक प्रयास करलिअनि ओ नहि मानलथि । आखिर पाँचसालक बाद एकबेर फेर हमरा संतान होएबाली भेलनि ।
हम पूछलिअनि-
-यदि फेर बेटे भऽ गेल तखन।
-एहि बेर लक्ष्मी आएत।
-ई कोना जनैत छिऐक?
-देखैत रहिऔक ।
हुनकर बात सही भेलनि । एहिबेर हमरासभक बेटीक जन्म भेलनि।

ओहिना बिना कोनो परेशानीकेँ। अस्पताल पहुँचलाक एकघंटाक भीतर सामान्यरूपसँ बच्चाक जन्म भऽ गेलैक। एकदम स्वस्थ बच्चा ,बेस भरिगर। तकरासँ छगुन्तामे रहए। रमा तँ ओहीदिन साँझमे घर वापस आबि गेल रहथि। एहि तरहेँ हमसब तीनटा संतानक माता-पिता भऽ गेलहुँ। एहि बातसँ हमसब बड्ड प्रसन्न रही। रमाक प्रसन्नताक तँ अंत नहि छल।
हमर बेटी शालिनीक जन्म भेलनि तँ पहिने कनी-मनी चिंता भेल। आखिर बेटी अछि,तकरामे विआह कोना होएत? कहि नहि कतेक घर-वर भेटैक? जेना बेटीक सामने विआहक अतिरिक्त किछु भऽए नहि सकैत छल। मुदा ओकर जन्मक बादसँ हमरा दुनूगोटेक भाग्य बदलए लागल। दुनूगोटेकँ नोकरीमे प्रगति भऽ गेल। दरमाहामे पर्याप्त बढ़ोत्तरी भेल। हम आ रमा ई सोचिकेँ चकित रहैत छलहुँ जे कोना शालिनी अपन ओरिआन स्वतः कए चल जा रहल छलि। आब लागए जेना हम अपन बेटीक जन्मसँ धन्य छलहुँ।
शालिनीक जन्मक बाद हमरालोकनिक आर्थिक स्थितिमे निरंतर विकास होइत रहल। बच्चासभ नाम नीक-नीक स्कूलसभमे लिखओलहुँ। अपना भरि पूरा प्रयास रहैत छल जे ओकरासभकेँ कोनो प्रकारक दिक्कति नहि होइक। ओहोसभ अपन-अपन स्कूलमे नीक करैत रहल। मुरली आ श्याम बड्ड नीक अंकसँ मैट्रिकक परीक्षा सफल भेल। तकर बाद ओकरसभक नाम कॉलेजमे लिखाओल गेल। मुरली आ श्याम पहिल प्रयासमे इंजीनियरिंगक प्रवेश परीक्षामे सफल रहल। ओकरसभक इंजीनियरिंगक पढ़ाइमे हमरा कोना

दिक्कति नहि रहल । दुनुगोटेकेँ पर्याप्त छात्रवृत्ति भेटि जाइत छलैक । ई सभ इन्जीनियरिंग कालेज सँ निकलल कि शालिनी कालेजमे नाम लिखओलक । ओहो अपन लाइनमे मास्टर्स निकलल । समय कोना बीति गेल से पता नहि लागल । बच्चासभ अपन-अपन पैरपर ठाढ़ भऽ गेल । हमसभ अपनाकेँ बड्ड भाग्यवान बुझी जे हमर संतानसभ एतेक सुयोग्य निकलल , जीवनमे नीकसँ स्थापित भऽ गेल । मुदा ई उत्साह बड्ड दिन धरि बनल नहि रहि सकल।

मुरली आ श्यामकेँ परिसरसँ विदेशमे उच्च वेतनवाला नौकरी भेटि गेलैक। ई सभ अपन-अपन गंतव्यपर सहर्ष चलि गेल । कनीको ई नहि सोचलक जे हमसभ असगरमे कोना जिअब,कोना समय बिताएब,बेर-कुबेर के संग देत? हमहुँसभ की करितहुँ? बच्चासभक प्रसन्नतामे अपन चिंतासभ बिसरि गेलहुँ । जाबे शालिनी पढ़ैत छलि,ताबे कम सँ कम ई समय-समयपर अबैत जाइत रहलि । हमहुँसभ ओकर कालेज अबैत-जाइत रहैत छलहुँ । मुदा जखन ओकरा नौकरी लागि गेलैक आ तकर बाद ओकर प्रेम विआहक प्रसंग प्रकाशमे आएल तखन तँ हमसभ किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेलहुँ। मुदा कोनो विकल्प नहि देखि हमसभ ओकर इच्छाक सम्मान करब उचित बुझलहुँ । अपन हिसाबे कहलासँ किछु होमएवला नहि छल । ओसभ निर्णय कऽ लेने रहथि । हमरासभकेँ तँ मात्र तकर सम्मान करबाक हेतु सूचना देल गेल छल । हमसभ सएह कवा कलहुँ । हमसभ तँ शालिनीक बात मानि लेबाक हेतु तैयार भऽ गेलहुँ । मुदा वरक माता-पिता अड़ि गेल । आब की होएत? किछु हूनव

नहि करए। एमहर ओ दुनुगोटे अपन निश्चयपर अडिग छल। मुदा इच्छा रहैक जे दुनुपक्ष सेहो ओकरसभक संग ठाढ़ रहए आ विआहमे सामिल रहए। ओकरसभ विआह बहुतदिन धरि एही कारणसँ लटकल रहि गेल छल।

5

शालिनीक प्रेमी ओकर सहपाठी रहए। ओ मूलतः केरलक निवासी छल। ओकर पिता क्रिश्चन आ माए ब्राह्मण छलैक। ओना व्यवहारमे कोनो कमी नहि रहैक। पढ़ल-लिखल परिवार रहैक। आब ओ सभ मुम्बईमे बसि गेल छल। ओकरहु नीक आर्थिक स्थिति रहैक। अपन गीरकाठरीक फ्लैट रहैक। अखनहु धरि केरलमे अपन पैतृक गाममे संपत्ति रहब करैक। मुदा आवाजाही कम भए गेलाक कारणसँ दिआद-बादसभ ओहिपर कुदृष्टि देने रहैक। ओ सभ चाहैक जे औन-पौन दाममे सभकिछु हड़पि ली। गामक संपत्ति बचबाक दृष्टिसँ ओ सभ अपन पुत्रक विआह लगपासमे ठीक कर रहए। मुदा बेटा विद्रोह कए देलकैक। ओ तँ पहिनहिसँ शालिनीक संग बहुत आगू बढ़ल रहए। दुनुगोटे चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट रहए। संग-संग पढ़ैत काल आपसमे प्रेम भए गेल रहैक। शालिनी सेहो ओकरा संग विआह करबाक हेतु अड़ि गेल रहए। -वरहुँ शंभु न तँ रहहुँ कुमारी। आखिर ओहोसभ मानि गेलैक। आखिर ओकर विजय भेलैक। हमसभ हारि गेलहुँ।
शालिनीक विआह ओकर प्रेमीसँ दिल्लीमे संपन्न भेल। ओकरसभक

आपसी प्रेम असली छलैक जे समयक संग आर मजगूत होइत गेल। ई शालिनी क्रिश्चन बनल ई ओकर प्रेमी हिन्दू। जाति,धर्मसँ ऊपर छलैक ओकर प्रेम। दुनू गोटे मंदिर जाइ,आ चर्च जाइ। दुनू गोटे सब पावनि मनाबइ। शालिनीक पतिकँ कोनो परसानी होइतैक तँ ताकर निवारण हेतु ग्रह शांतिक हेतु ओ सब ज्योतिषीजी लग जाइत। करबाक मान जे धर्म आ आराधना ओकरासभक आत्माकँ आर विकसित कऽ देने रहैक। ओसब एकटा बढ़िआँ मनुक्ख बनि गेल रहए। एहि सभक अछैत शालिनी जखन कखनहु हमरा ओहिठाम अबैत तँ ओकर पति संग आबएसँ बचैक। एकरा एक प्रकारक संकोच कहि सकैत छिऐक। मुदा ओ शालिनीकँ कहिओ कोनो प्रकारक प्रतिबंधम नहि रखलक। प्रेमक एकटा ज्वलंत उदाहरण छल शालिनी आ ओकर पति।

शालिनीक विआहक बाद हमरा बड्ड उदास भेल। मुदा मनुक्खक स्वभाव होइत छैक जे ओ सदिखन किछु-ने-किछु लहरा बनओने रहैत अछि। तँ बच्चासभक हेतु अनावश्यक चिंता हमसब करैत नहि गेलहुँ। मोहवश अपनाकँ संसारिकतामे ओझरओने रहलहुँ। इएह हमरासभक दुखक कारण भऽ गेल। नहि तँ चिउँ चुन-मुन जकाँ जखन ओ सब छोट भेल,हमहुँसब निश्चिन्त भऽ सकैत छलहुँ। अपना हिसाब जीबि सकैत छलहुँ। मुदा से भेल नहि। ओ सब ने हमरासब लग आबि सकल ने हमसब ओकरासभक मोहसँ अपना-आपकँ मुक्त कऽ सकलहुँ। परिणामतः हमरासभक मानसिक दुख बढ़ैत गेल।

शालिनीक विआह तँ भऽ गेल। मुदा हमर दुनू विदेशवासी पुत्र

अखनहु विआहक नामसँ कनी कालेँ नहेँ छल। ओ सभ लगम नहवा नहि करए जे हम ओकरासभकेँ किछु कहितिऐक अथवा ओएहसभ किछु कहितए। कहिओ काल यदि हान-हान हेवा कएल तँ आन-आन गप्प होइत, मुदा विआहक चर्च न ओसभ करए न हमसभ स कए पाबी। हमहूँसभ नहि चाही जे विआहक चर्च कए अनन माहौलकेँ खराब कएल जाए। थोड़ब कालमे हान कटि जाएत। एकर बाद हम ओ काए हमसभ काए? बीचमे हजारों माइलक दूरी आबि जाइत। ओही तँ हान अछि जे गप्पा हए जाइत अछि।

हानाक आवाजाही कालक्रमे क्रमश: कम होइत गेल। मूनली आ थाम अपन-अपन दुनिआमे रमि गेल। हमसभ जीवि तँ, मनी तँ, ओकनासभक लल धनसन। नहि-नहि कए कहितए जे निदेशमे एहि तनहक लरूढ़ा कानो माता-पिता नहि करैत अछि। बच्चा जखन सिआन हेल,ओ पूर्णतः स्वतंत्र हए जाइत अछि। माता-पिताक कर्त्तव्यक इतिश्री हए जाइत अछि। अपना देशक संस्कृति आ सामाजिक परिस्थिति एहि बातकेँ स्वीकार नहि करैत अछि। जीवन पर्यन्त परिवारमे माता-पिताक संतानसँ रागात्मक संबंध बनल रहैत अछि। अखनहु संतानसँ ओही अपेक्षा कएल जाइत अछि जे ओ वृद्ध माता-पिताक ध्यान राखए। एहिलेल कानूनो बनल अछि। मुदा कानून बनिए गेलासँ की होएत? अपन संतानक खिलाफ कोट-कचहरी कतेक नहि जाए चाहैत अछि। बहुत अपनादस्लकरय मामिलासभ यदि होइत अछि तँ ओ प्रकाशमे नहि हए पबैत अछि। कानन कानून सभकिछु तँ दए सकैत अछि मुदा सिनेह

काएसँ देत? सम्मानक भाव कानूनसँ नहिए भए सकैत अछि। तँ वयोवृद्ध माता-पिता सभकिछु सहिओ कए संतानक खिलाफ कानूनक मदति नहि लबए चाहैत छथि।

शुरूमे मूनली आ श्याम अमेरिकामे रहए। बादमे सुनलिऐक जे मूनली लंदन चलि गेल आ ओहीठाम एकटा स्थानीय महिला सहकर्मीसँ प्रेम भए गेल छैक। यद्यपि ओ सभ संगे नहि रहल अछि मुदा विआह नहि कने अछि। करबा करत कि नहि तकर कोनो ठेकान नहि अछि। ओमहर एहि तरहक प्रथा आम बात भए गेल छैक। ई विआहक मश्रुटिम पएए। भोग-विलासमे जीवन बिताएब जखन मूल उद्देश्य भए जाएक तखन आन की सोचल जा सकैत अछि? काल्हि के देखलक अछि? एहन लोकसँ की उम्मीद कएल जा सकैत अछि? जे अपनहु भविष्यक बारेमे नहि सोचि पाबि रहल अछि से हमरासभक की करत? हम ई बात बूझिएक आ रमाकेँ सेहो बूझबाक प्रयास करिअनि। कहिअनि-

-आब ओकरासभकेँ बिसरि जाउ। बिसरि जाउ जे ओ अपनसभक बल एतेक पैघ भेल। एतेक पढ़लक-लिखलक। ओ तँ अपनसभक कर्तव्य छल, से हमसभ कएलहुँ। मुदा तकर प्रतिदान हएत, ओसभ हमरालोकनिक प्रति अपन किछु कर्तव्यक बोध राखत से संभव नहि अछि। युग बहुत बदलि गेल अछि। तँ हमहुँसभ ओहि बातकेँ बूझिऐक तहीमे समाधान संभव अछि।

से सभ यदि कहितिअनि तँ रमा तमसा जाइतथि- अहाँकेँ तँ सदिखन उनटे सोचैत रहैत अछि। अपन रक्तचाप जाँच

करबाउ।

खैर !हम की करितहुँ? सुनि ली झुनकर बात। मुदा चिंता त हमरा रहल। सुनली त ज स। मुदा थ्यामक त किछु पता नहि लागल। ओ कतऽ हालतिमे अछि? की ओकर योजना अछि? पारिवारिक स्थिति की अछि? कोनो बातक जानकारी ओ हमरालोकनिकेँ नहि देलक। यदि अपना दिससँ पूछिऔ दितिऐक त कहितैक-

-हमर निजी मामिलामे अहाँसभ अनेर टाँग नहि अड़ाबी।

बस बात खतम। हम कहिअनि नमाकँ-आब बूझलिऐक ना। कहैत छलहुँ ज ओकरासभक चक्करमे नहि पड़ू। अपन इज्जति बचा कए राखू। मुदा नहि,तखन लिअ। भोगु कष्ट।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिम्रिआ ध्याढ़ी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्थगल मन्त्रालयिक मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.रातिसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. हसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास)

१२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्षः२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.कृष्ण थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्षः२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि गेल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक पराग(उपन्यास); प्रकाशन वर्षः२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि गेल अछि सबकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि गेल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓒.𑓘.𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩-𑒨𑒴𑒏𑓂𑒩𑒮𑓂𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒑𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒨𑒴𑒏𑓂𑒩𑒮𑓂𑒥𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒙𑒰 𑒞𑒏𑒾𑒢 (𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨 𑒏𑒙𑒰𑒏𑓂𑒭)



𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩

𑒨𑒴𑒏𑓂𑒩𑒮𑓂𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒑𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒨𑒴𑒏𑓂𑒩𑒮𑓂𑒥𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒙𑒰 𑒞𑒏𑒾𑒢 (𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨 𑒏𑒙𑒰𑒏𑓂𑒭)

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒅𑒥𑒅𑒰𑒃 𑒢𑒯𑒱 𑒒𑒱𑒢𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲. 𑒄 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒞𑒏𑒾𑒢 𑒂 𑒑𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒮𑒥 𑒨𑒴𑒏𑓂𑒩𑒮𑓂𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒐𑒪 𑒧 𑒢 𑒥𑓀𑒥𑒪𑒰 𑒒𑒰𑒙𑒲 𑒞𑒏𑒾𑒢 𑒏 𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒪𑒢 𑒏𑒲? 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒏 𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒪𑒰𑒖 𑒡𑒰𑒐 𑒕𑒻 𑒂 𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒅𑒏𑒪𑒯𑒰 𑒏 𑒨𑒴𑒏𑓂𑒩𑒮𑓂𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒡𑒴𑒩𑒲 𑒏 𑒪𑒰𑒖 𑒕𑒻? 𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒃 𑒕𑒻 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒜𑒪𑒏𑒻 𑒢𑒯𑒱 𑒂 𑒥𑒩𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒰𑒥𑒱𑒋 𑒔𑒴𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒋 𑒄 𑒞𑒏𑒾𑒢 𑒮𑒥. 𑒧𑒢𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒨𑒢 𑒅𑒞𑒰𑒢𑓂𑒏 𑒨𑒹 𑒖 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏 𑒏𑒲 𑒏𑒋 𑒪𑒢? 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒫 𑒧 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒥 𑒮𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒢𑒢𑓂𑒏𑒥𑒰 𑒨𑒹 𑒢 𑒁𑒃 𑒞𑒏𑒾𑒢 𑒮𑒥𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒏 𑒢𑒰𑒏𑒢? 𑒏 𑒧𑓀𑒑𑒢𑒻 𑒖𑒥𑒰𑒥, 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒢 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒕𑒻?

𑒯𑒧 𑒥𑒖𑒪𑒲 𑒯𑒾 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒩𑒱𑓀𑒮𑒢 𑒩𑒱𑓀𑒮𑒢 𑒏𑒲 𑒯𑒼 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒼? 𑒒𑒩 𑒧 𑒞𑒏𑒾𑒢𑒲 𑒯𑒼 𑒑𑒹𑒪𑒾? 𑒏𑒲 𑒏𑒰𑒃 𑒩𑒰𑓀𑒑 𑒐𑒳𑒂𑒋 𑒠𑒪𑒏𑒯𑒼 𑒖 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒄 𑒋𑒢𑒰

बडबडाए रहलौं? पुरस्कार त गेल जाइ छै डाकरा करूँ टोलीक हालैं छैए? हमर गप सुन बाबा हाँ हाँ क हँस लगल आ बालककेँ हो कारीगर तेना सबटा यथार्थ बूझल छह आ यथार्थवादी लेखन माध्यम लोक क पुरस्कारी धूर्त क दरबार विद्धाक कए दै छहक? आ अखैन अनठिया क हमर स पूछै छह आ हमर स सूनै चाहै छह? हम बालली यौ बाबा हम कोना चार टोली क गिरोह म रहै छी की? हमरा पुरस्कारी चारो टोली बारे म कुछो न बूझल है क? बलू अहीं साह साह कहू ज पुरस्कारी टोली की हइ?

बाबा बालककेँ देखै नै छहक ज मैथिली साहित्यकार सब चार टोली ओंका अपन गिरोह बनन अछि. जहन गिरोह तहन पुरस्कार बँटा टोली आ तहन पुरस्कारी गुर्गा सब. ई सब तना हो हो करैह ज एकर सब दुआर मिथिला मैथिली बाँचल हाउ? आ एहि धूर्त म ई सब मिथिला मैथिली क अपन बपौती बूझि कब्जा जमैने रहल. ककर नाम गनबिअह? साहित्य अकादमी, मैथिली राजभाषा अकादमी, मिथिला मैथिली समिति, लेखक संघ, परिषद ककरा एहन गिरोह आ तखन गुर्गा सब मिली मैथिली पुरस्कारक टोली म लागल यौ की? यथार्थ कहबहक त टोली आ गुर्गा सब बाकुड्बेल क अपन चलकपनी कुकृत्य क मँदे क हिसाक म रहैह. मैथिली पुरस्कार म कोनो निष्पक्ष व्यवस्था कतौ नै रहैह? जहन गिरोह आ जहन गुर्गा तहन पुरस्कार बँटा टोली. एहि दुआर त मैथिली पुरस्कार सब महत्वहीन भ गेलै आ घिना क नाखि दै जाइ गेलै. यथार्थ कहक त उपर हमर तार कुंठित कहि चलकपनी करैह. उ

ठेके गुर्गा सब अपन काजक कुण्डली अछि जे निश्चय व्यवस्था क बात पर कार्यकर्ता पर उनक रहल जाइत की?

हम बाबा स पूछली जे पुस्तकालय दलके आ रहलै त ओहू स पुस्तकाली ठेके आ गुर्गा केहन भ गेलै? बाबा हां हां क बाजै लगलै जे कानीगन पढ़ू सबटा हमर मुँह ओहू पुस्तकाल बँटा ठेके सबहक देखान विद्वान कारवह त हेहूआ लेल सूनहअ सबटा किनदानी. एकटा गप कहअ हमर पाहुन यथार्थवादी विचार मिलै छह आ अपना सब त काना गिनाहा म नै नहि छि. तहूया हम पाना बसहा बनद पुस्तकाल द दियअ आ तूं हमरा मिथिलांचल दूर पत्रकानि पुस्तकाल बाँटि देउ त ओहू पुस्तकाली ठेकेदि रहलै की नै? विद्या पनिव, सन कूटमानी, हिंसावादी हाहकानी, संयोजकीय जागानी बल मैथिली पुस्तकाल लूट मचल छै आ उतर अनका उपदेश जे मनकल मुँह मयनै नीक त ओहू ठेके सबक अपन किनदानी किए नै देखै छै. एकरा सब लल कहबी बनौ न पुस्तकाली ठेके क अपकनमी मुँह उघार नीक. पुस्तकाली ठेके सब नैह पन निश्चय व्यवस्था बन हनहेओ वज्ञान खेस पनै छैक्क की?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓒.𑓙.𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒨 '𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲'- 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝- 𑒏𑒰𑒏𑒲 : 𑒑𑒳𑒠𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒢𑒲



𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒨 '𑒥𑒙𑒼𑒯𑒲'

𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝 - 𑒏𑒰𑒏𑒲 : 𑒑𑒳𑒠𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒢𑒲

𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒏𑒿 𑒠𑒹𑒐 𑒏𑒰𑒢𑒲 𑒩𑒯𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒑𑒼𑒩 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒪𑒑

कानी ययठी दखा नदल छङ्कि। माथा मदक कश उठि (गलैद्ध अछि। दिल्ली म ७स्म सँ ꣳलाज रऽ नदल छङ्कि। दनाꣳी खागि- खागि काकी कँ दद म गर्मी वढि (गल छैद्ध। काकी आव नहि जीवनीद मना उमन सैं0 यान कलकैद्ध७ । अखन आउान दिन जीव सकैग छलीद।

निनाद कँ जश दनाक चाही ज अगक खर्चा रलाक वादा माय कँ जियौन छथि। यमनाज सँ लिउ नदल छथि उ।। मा७ मा७ दा७ग छै। काकी यठल-लिखल नहि छथि। विशुद्ध निनउना। गानि दवा म उा कानद्धँ तिञी लन छथिद्ध। यूना कूल-खानदान कँ गानि दक उकैट दैग छथिद्ध। यूननका जमाना म सासु वउ (गैनखन दायग छलीद। छन म यूगीद कन साग यूनखा क उ(वेस दैग छलीद। उ जमाना किछु आउान छलै, यनꣳ आव स नहि दायग छै। यूगीद आव अवैग मांगन गिन(थेन र जा७ग छथि। सासु-ससुन कँ कानद्धँ माजन नहि दैग छथिद्ध। कदवी छैन -' घननाला थानदान गँ तन काद का' ,ꣳ सदी दिट र नदल छै । जमाना वदल नदल छै। आव यूगीद लग कुंजी कन माला उंन म लटकैग नदैग छै। आव गँ ७टी७म कँ जमाना आवि (गल छै।

काकी कन आँखि सँ नान वहि नदल छङ्कि। उासाना यन वैसल दमना दिस गाकि कँ कानि नदल छथिद्ध। दवा उकान र क कानि नदल छथिद्ध। सर वटी कँ याद र (गलैद्ध। निनाद कँ दूटा संगान छै- ७कटा लउका आउान ७कटा लउकी। सूमन आउान उामप्रकाश

𑒪𑒪 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒏𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒐𑒰𑒮 𑒏𑓄 𑒮𑒳𑒧𑒢 𑒪𑒪, 𑒅 𑒕𑒯-𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒻। 𑒣𑒜𑓃𑒻 𑒧𑒹 𑒤𑒱𑒮𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒕𑒪। 𑒏𑒏𑒯𑒩𑒰 𑒞𑒏 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒻। 𑒠𑒮𑒫𑒲𑓀 𑒧𑒹 𑒤𑒹𑒪 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒍 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 । 𑒍𑒞𑓄 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒥𑒏𑒩𑒲 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒤𑒻𑒏𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲 𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒧𑒢 𑒏𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒡𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒍𑒧𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒮𑒓𑓂𑒑 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒍𑒑𑒩𑒢-𑒍𑒑𑒩𑒢 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒃𑓀𑒙𑒩 𑒣𑒰𑒮 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒞𑒹𑒪-𑒢𑒴𑒢 𑒏𑒩 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒏𑒿 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒔𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒂𑒑𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻𑒞 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒕𑒻। 𑒂𑒥 𑒍 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒩𑒐 𑒖𑒲𑒥 𑒖𑒰𑒋𑒞 , 𑒞𑒿 𑒥𑒴𑒗𑒱𑒨𑒾 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒏𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒦 𑒖𑒾। 𑒕𑒼𑒙 𑒥𑒯𑒱𑒢 𑒏𑒩 𑒥𑓂𑒨𑒰𑒯 𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒯𑒱𑒩𑒱𑒬𑒰𑒢 𑒦 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠, 𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒮𑒿𑒦𑒻𑒩 𑒪𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒣 𑒏𑒿। 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒁𑒐𑒢𑒼 𑒡𑒢𑒱 𑒏𑒩𑒾 𑒦𑓄 𑒏𑓄 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱। 𑒅𑒢-𑒏- 𑒠𑒴𑒢 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒏𑒩𑒴 𑒂𑒍𑒩 𑒦𑒩𑒱 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒅𑒪𑒰𑒯𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒃𑒋𑒯 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒩 𑒢𑒲𑒏 𑒂𑒔𑒰𑒩-𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒕𑒱𑒨𑒻𑒨।

𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒤𑒹𑒩 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒔𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒍𑒧𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑓄𑒏𑓄 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒏𑒻𑒯 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯 - "𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒥। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒤𑒹𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒥। 𑒄 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒧𑒳𑒪𑒰𑒏𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱।"

𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒏𑒩 𑒠𑒬𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒢𑒼𑒩 𑒮𑒿 𑒛𑒥𑒛𑒥𑒰 𑒑𑒹𑒪। 𑒯𑒧 𑒁𑒫𑒰𑒏 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 । 𑒮𑒰𑒞 𑒙𑒰 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒋 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒰𑒏𑒲। 𑒂𑒃 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒪 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒯𑒱। 𑒏𑒻𑓀𑒮𑒩 𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒥𑒅𑒂 𑒏𑒩 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒧𑒰𑒩𑒢𑒹 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒏𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒧𑒼𑒢 𑒑𑒩𑒱𑒥𑒾𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯,

यनञ्ञ रुनदम आव निनाद कँ खाजेग नरेग ठथिह्न। ॐ मायक ममता छियेय। गानि देग अघान नहि आउान सनरुक कगेक माल नहि।

काकी सँ अॐ वन रुम खुव वगिजलहोँ। कुनकन आँखिक का0नी म सरुरुक लल अगाध सिनरु छैह्न। निनाद अनाथ र जगारु मायक मूॐला यन।

-संगाष कुमान नाय 'वटाही', ग्राम - मंगनौना

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन पठाउ।**

३.षष्ठ खण्ड

३.१.पवन मिश्र 'गोनौली'-संस्कारक चूकल

३.२.राज किशोर मिश्र-अनुरक्त

३.३.कामश्वर चौधरी- आह्वान/ प्रार्थना

३.४.रामानन्द मण्डल- हे बाबा गांधी!/ लाल बहादुर शास्त्री!/ हे काका जयी

३.५.प्रमोद झा 'गोकुल'- श्रीमैथिली वन्दना

३.१.यवन मिश्र 'गोनौली'-संस्थानक चुकल



यवन मिश्र 'गोनौली'

संस्थानक चुकल

टीक छा७लौ, टीका (वह्न) छा७लौ,
छा७लौ युजाया0 ।
खानयानक यनरुज छा७लौ,
ञाव नहि काना लाजधाक ।।

(धाती- कुर्ता छल ज यरुचान रुमन,
माय -वायक ञादन कण्ठि प्रधान रुमन
ॐ सरु ञाव नै नरुल,
नै ककना किया सुनि नरुल ।।

संस्थान- संस्कृतिक यनिराबा वदलल,
ज मानथि स छथि यिछ७ल ।
ञाधुनिकताक रुा७ अछि सरुजा७ ,

अयन सर निखिद, दखौसक धनथि यछान ||

खानयान- वेशभूषा, नहुन सहुन - आचान विचान,
सर किछु अछि वदलि नहुल |
सामाजिक वंधन निष्क्रिय अछि,
अन्तर्जातीय वियाह जान यकनि नहुल ||

अयन संस्थान आ संस्कृति सँ,
हम ह' नहुल छी दूर |
आत्मचिंतन अतिआवश्यक,
गहुन चिंतन करू हनयून ||

यश्चिमि देश म, हमना संस्कृतिक खवजाउ चलन हल,
वेदयाO, गीतायाO, उयनिषद यन सहा खाज हल |
चमक दमक आ चालि चलन ठाकन अयनाकय,
अयन अयनहि यन आव वाम हल ||

एकादशी, चतुर्दशी आ एकसंमाक वदला,
आयल, डान्टिंग- हास्टिंग, करवाचौथ आ तीज |
विधि वहान,ओी सर यछुआयलक निशानी,
याववनिगिहान सर गजलौ, छाउलौ सामा- चकवा गीत |

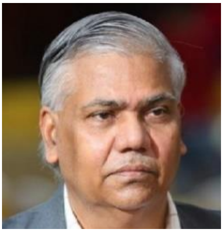
अयन याववनि, अयन नीति,

अपनासँ कनी सदिखन प्रीत,
संस्कार अपन, नारी आदि- अनन्त |
ई जन अपनहि जाति सँ करता, ई
जीवन रनि कुहुना आ यन्त्रणा,
सुखद नै दुनकन अंग ||

- हाटगछिया, थाना, कोलकाता- 700105, 9433746295; सहायक शिक्षक, श्री उमापति विद्यामंदिर, पश्चिम बंगाल सरकार, कोलकाता|

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ**

३.२.राज किशोर मिश्र-अनूरुन



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (टेली), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,ग्राम- अन्दर ठाढ़, पो. अन्दर ठाढ़, मधुबनी

अनूरुन

गरजि रहल , कान्ह मनुक्खक ,
अज्ञा थ, ज्ञा आएल अहंकार,
कान्ह ,देखवा म आबि रहल अछि ,
ब७ -ब७ ,टा य -टहक्का र।

सज्जन कॅंं ,दुर्जन स्ँ टि चढा ,
वसअउलक कयटक जा ल म,
चि क्कि न सकल उा शि का नी कॅंं,
गँ , यद्रुॅंचि (गल ,उादि द्दा ल म।

अधि का न लल कि उा खखनि नव्ल ,
अछि कि उा वनल ,नि नंकुश,
या वि सम्यदि क अम्रा न, दुखी ,
आ,नि धैन कि उा, अछि व७ खुश।

क0 नि ना द म रि ७ल अछि ,
या कल यजा न, का ना यिं गल,
ढां गी ककना ञुलि यन,
अछि ङी ट नव्ल, अछि नजल।

जि नक मा न अयन अशुद्ध छक्कि ,
उा ,द७ नव्ला अछि उयदश,
वदलि न दैग अछि नस्र , आवनध ,
चा द्द ४s लि ७ का ना स्रा।

कुार्क, टि टस्रा सँ नदि का ना ,
मु0, सय स्s, जा ७ा,

कावा कूदा यग ल ,मूदा ङा,
नरु गऽ नहि ङ्कू या ७गा।

दुः ख म (धेर्य धऽकऽनहेग छथि ,
समा धा न म ञ सदि खन ला गल,
नि यफि रूा ि७ वा रून नि कलै छथि ,
ङा ,रुऽ न सकै छथि ,अरा गल।

गम -गक यन रुगजा गनी क ञ्जा ग,
गम चा टि -चा टि ,मूरु ङ्गैक का ग।

मूदा ,ढी ० वनल ङा अछि अ७ल,
घनघा न गमा म, म गँ ङा वनल।
महा ब्या ल गनल मद म नरुसल,
सयनौ न रि ७ल, गऽ रूध घा कचल।

जना ,कयट क का ०क रूञा ,
टि कैग नहि ङ्गैक ७कन रूथकंता ।

कि ङ्क दि न धनि जा नगन नहा रूा मस,
अगि लगा ङान, रूा ञ्ग अछि गा मस।

सौ ग्यगा कथमयि न अछि कमजा नी ,

ककन काक दि न वललैक वनजा नी ?

खसि यउेंग अछि ,चा न ञा,
ञकना नहि छैक ,अयन खा क्क,
नकग न यज्ञन ,ञ नि ञ वल यन,
रग्न नि धा गा हा थूक्क, ना मा।

सूनहु यउेंग छैक सरु क ॅं,
ञ नि षय हा ॄछ ड्रगुला ग,
मृदा , सूनै क ञया ञंख क ?
वमालव क वा ग।

कग दि न माँ यग दि नमधि क,
घा घस ,अका स म यसनल ?
मू0 वना देक,सत्र क,
अछि न ञगक ,मू0 म वल ।

मि थ्या लां छन लगा ककना यन,
ककन रलैक ञकि नना ?
यअञालक न या य ,प्रणि स्ठा कहि ञा,
कज्ञलक सरु ,ञहि सँ, घि नना ।

वा गी क टमी जनि कs देग अछि ,

ॐॐजा ग ,री गन -वद्दा न,
मूदा ,मा न क ॐॐनखा जनि कS ,
यसा नेठ दूखक अह्ला ना

उगे -उगे जँ वरेग नरुव ,गS ना यि लव धननी क,
कनक दो ि क' सुगि नरुव ,जा ७व वा रुना यनगी क?

क्रि आ -नवन म मल जग७,
'साँ व म न का ना आँव',
क यगि आ७ग वगुला क
ज 'रुम नरि खा ७व मा ठ'?

कूंO। ञा ह्नन्ह्न म तूवि कS ,
ञैना ७ लगेग अठि मा न,
नी क सा व सँ, स्ला न -चझ क,
वा ट वूसS म,आ७ग न का न?

दुवरि आ ठै, वो वरि आ ठै,
वूनय यठेग ठै, अयन वा ट,
वूधि आनक ठै अयन नस्फा ,
वूनेठ मा ग , मूर्खा -चया टा

नी क वा ट ञा नी क कननी ,

वनवैष्ठ ,जि नगी क' सुचि ग्र,

दुष्टा स्टैग अष्ठि नस्मा यन ,

आ, कि ह्ल मा ना क मि ग्रा

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

३.३.कामश्वन वैधनी- आह्वान/ प्रार्थना



कामश्चन चौधनी- आह्वान/ प्रार्थना

१

आह्वान

उथि जाउ अव स्य (गेल स्पन
अष्ठी आस लगा वलना वकान
छथि कानि नस्ल मैथिली अयन
याछू दूनकन यसनैप नाना

ऽगिस्लासक गनिमा आ निगुणि
नहीं व्यर्थ कन्क ऽी समय सुणि,;
लिखि जाऊ नाक् ओस्यिन्नाम
नींगि जाओ धना स्नियन कवाना उ0 जाऊ....
ज माओ सिनस्क शक्ति स्ल
छथि स्ल चौक निऊिष्क स्ल;
स्म सुध स्नकन लवनिकास्यिा
उा मौन यनलि सावं निसना।।
उ0 जाऊ....

ऊा दलनि याँखि ञ ऊनि सकी
गगनक उ७ान साँ घुनि सकी;
नागिक अनलानमं वानि दीय
क कना आ॰्ी कनियां ॰॰जान
ऊ0 जाऊ....

२

प्रार्थना

हकृष्ण! अहाँ वृन्दावनम
कहिया गक कनव नहो नमध
युग वीगि गेल ह अनध नृयगि
७क वन कन्ह मिथिलाक ग्रमध।

वृंदावन म छूटली नाधा
मथूना चलि गेल नही आधा
मिथिला म सीगा सगग संग
नहलीह , अहाँ रहकी वन वन।

युगना वनि माऽ यियौल गनल
कंसक सन मामक दंश सहल
मिथिलाक प्रगिष्ठा निष्णु नय
कहिआ यऽगैक अहाँक चनध।

सोलह हजार गोपीक बीच
बटलहुँ प्रथमक अहाँ मंत्र बीज
सानिक सिनेह, सम्मान सासुरक
हटि सकल जनकक धन्ध।

छी बिसरि गेल कान्हवनक गीत
सीताक रूप जनकक पीनीत
ब्रजगोपिकाक संग नवल नृत्य
आकण्ठ डूबी ब्रज कयल ब्रजन

निस्तब्ध कयल अहाँ अपन शङ्ख
आ नुका गेलहुँ भूगोल मध्य
द्वारिकाधीश राजि सिंहासन
वसुधैव कुटुम्बक कर्म सृजन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.४.रामानन्द मण्डल- हे बाबा गांधी!/ लाल बहादुर शास्त्री!/ हे काका जयी



आचार्य रामानंद मंडल- हे बाबा गांधी!/ लाल बहादुर शास्त्री!/ हे काका जयी

१.

हे बाबा गांधी!

हे बाबा गांधी!
कहिया तु राम रहा!
आजु तु रामक भ गेला!१!
हे बाबा गांधी!

𑒂𑒃 𑒑𑒼𑒛𑒮 𑒩𑒰𑒧 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰।
𑒄 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒩𑒰𑒫𑒝 𑒯𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒰।𑓒।
𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲।
𑒄 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒩𑒯𑒰।
𑒂𑒃 𑒄 𑒐𑒪𑒢𑒰𑒨𑒏 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰।𑓓।
𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲।
𑒂𑒃 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒣𑒰𑒛𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰।
𑒑𑒼𑒛𑒮 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒪𑒑𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰।𑓔।
𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲।
𑒏𑒯𑒲𑓀 𑒏𑒯𑒲𑓀 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒣𑒴𑒖𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰।
𑒋𑒢𑓀𑒥 𑒣𑒰𑒯𑒢 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒣𑒰𑒛𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰।𑓕।
𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲।
𑒣𑒰𑒯𑒢 𑒁𑒯𑒱𑓀𑒮𑒰 𑒥𑒏𑒰𑒩 𑒯𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒰।
𑒡𑒢𑒧 𑒯𑒱𑓀𑒮𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒖 𑒯𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒰।𑓖।
𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲।
𑒠𑒬𑒏 𑒯𑒰𑒪 𑒠𑒐𑒱 𑒏 𑒏𑒂𑓀𑒮𑒰 𑒯𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒰।
𑒩𑒰𑒧𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒏 𑒐𑒪𑒰 𑒯𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒰।
𑒯𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒑𑒰𑓀𑒡𑒲।

२.

𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒯𑒰𑒠𑒳𑒩 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲।

देश क लाल,लाल बहादुर शास्त्री।
जय जवान जय किसान क नारा देलन।
जीत लेलन पाकिस्तान।
समझौता ल लेलक प्राण।
गांधी क आदर्श पर चललन।
आच्छादन क देलन जीवन।
आइ जवान पर उठैत प्रश्न चिह्न?
किसान करैत हैय आंदोलन।
सरकार सबल हैय मौन।
आंदोलन मं मरैत हैय किसान।
देश क लाल,लाल बहादुर शास्त्री।
आइ लोग उठैत हैय प्रश्न?
लाल बहादुर आ गांधी मं, कौ हैय महान?
जवाब दा लाल बहादुर,कौ हैय महान?
हम छी पढ़ल ल गांधी टोपी।
लोग क न बुझाइ हैय, क हैय महान।
नाना हम त शिष्य छी, गांधी महान्।
देश क लाल, लाल बहादुर शास्त्री।

३.

हा काका जयी

𑒯𑒾 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒖𑒨𑒲।
𑒮𑒥 𑒞𑒰𑒯𑒢 𑒁𑒢𑒴𑒂𑒨𑒲।
𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒪 𑒫𑒥𑒲।

𑒯𑒾 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒖𑒨𑒲।
𑒂𑒣𑒰𑒞𑒏𑒰𑒪 𑒏 𑒥𑒱𑒩𑒼𑒡𑒲।
𑒪𑒛𑒪𑒰 𑒢𑒃𑒏𑒰 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲।

𑒯𑒾 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒖𑒨𑒲।
𑒃𑒿𑒠𑒳 𑒏 𑒢 𑒥𑒱𑒩𑒼𑒡𑒲।
𑒢𑒯𑒰 𑒏𑒳𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒥𑒱𑒩𑒼𑒡𑒲।

𑒯𑒾 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒖𑒨𑒲।
𑒐𑒪𑒨 𑒞𑒰𑒯𑒢 𑒏𑒧𑒲।
𑒢𑒯𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒳𑒬𑒰𑒮𑒢 𑒥𑒱𑒩𑒼𑒡𑒲।

𑒯𑒾 𑒏𑒰𑒏𑒰 𑒖𑒨𑒲।
𑒏𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒢𑒞 𑒠𑒐𑒲।
𑒢𑒰𑒧𑒰 𑒣𑒛𑒠𑒰 𑒏𑒢𑒰 𑒅𑒑𑒰 𑒖𑒨𑒲।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

३.७.प्रमाद झा 'गोकुल'- श्रीमैथिली वन्दना म

प्रमाद झा 'गोकुल'

श्रीमैथिली वन्दना म

चलु झम्म झम्म खेलाइ

मूनहि कचनी खुब खाइ ।।

सूगल नद्दू ऊठि नजाइ ।

एल विपाह वुसु यौ राइ! ।।

नाजक लल ज गनलौं गान ।

सहा लगैत ऐ गेल म्लान।।

चूडा दहीम ऊठल जान।

यान मखानम सटि गेल प्रान।।

माछक मूडा लखि यलौ यूना।

माथक पाग लटा गेल धूना।।
गुटबन्दी गोलैसी गुलछर्रा ।
काज हमर पैघ रोजमर्रा ।।
दारू पीबि सुतलहुँ बहुत ।
आगाँ पाछाँ कलहुँ बहुत ।।
दहल की सब कहू सत।
मर्दित मान आन छल जत।।
उठू उठू जागू सब मैथिल।
न माजर गुजर दन शैथिल ।।
जाति पाति पाटा पाटी छाडू।
मिथिला हित अपनाक जाडू।।
हद हान सब बलपूर्वक गाडू।
श्रीमैथिली चनदाम मनक माडू।।

-प्रमोद झा 'गोकुल', दीप, मधुबनी (बिहार), फोन -9871779851

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

